अप्रैल 2025

ऑपरेशन ब्रह्मा

भारत
विश्व-मित्र

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश — 1

02 मुख्य आलेख

2.1 **बैलगाड़ियों से लेकर सितारों के पार तक :** अंतरिक्ष में भारत की 50 वर्षों की यात्रा — 20

2.2 **वसुधैव कुटुम्बकम् :** विश्व-मित्र के रूप में भारत — 26

2.3 **एक पेड़ माँ के नाम अभियान :** हरित भारत की ओर एक कदम — 42

2.4 **भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि की नई उपलब्धियाँ** — 46

2.5 **जागृति का प्रतीक अप्रैल :** चम्पारण, जलियाँवाला बाग और दांडी मार्च — 52

03 संक्षेप में

3.1 **एक वैज्ञानिक दृष्टा का अवसान : डॉ. के. कस्तूरीरंगन** — 18

3.2 **इसरो मिशन के नायक वैज्ञानिक** — 24

3.3 **सचेत :** आपदा चेतावनी के लिए भरोसेमंद मोबाइल ऐप — 34

3.4 **दंतेवाड़ा साइंस सेंटर** — 40

3.5 **भारतीय कृषि की बदलती तस्वीर की कहानी :** किसानों की जुबानी — 50

3.6 **बाबू वीर कुँवर सिंह :** साहस की विरासत — 56

04 लेख/साक्षात्कार

4.1 **भारत की मानवता के प्रति प्रतिबद्धता :** आपदा प्रबंधन, वैश्विक स्वास्थ्य और सतर्कता की शक्ति - राजेन्द्र सिंह — 30

4.2 **दंतेवाड़ा साइंस सेंटर :** प्रगति, ज्ञान और नवाचार का प्रतीक - कुणाल दुदावत — 36

05 प्रतिक्रियाएँ — 59

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

आज जब मैं आपसे 'मन की बात' कर रहा हूँ, तो मन में गहरी पीड़ा है। 22 अप्रैल को पहलगाम में हुई आतंकी वारदात ने देश के हर नागरिक को दुःख पहुँचाया है। पीड़ित परिवारों के प्रति हर भारतीय के मन में गहरी संवेदना है। भले वो किसी भी राज्य का हो, वो कोई भी भाषा बोलता हो, लेकिन वो उन लोगों के दर्द को महसूस कर रहा है, जिन्होंने इस हमले में अपने परिजनों को खोया है। मुझे एहसास है, हर भारतीय का खून, आतंकी हमले की तस्वीरों को देखकर खौल रहा है। पहलगाम में हुआ ये हमला, आतंक के सरपरस्तों की हताशा को दिखाता है, उनकी कायरता को दिखाता है। ऐसे समय में जब कश्मीर में शांति लौट रही थी, स्कूल-कॉलेजों में एक vibrancy थी, निर्माण कार्यों में अभूतपूर्व गति आई थी, लोकतंत्र मजबूत हो रहा था, पर्यटकों की संख्या में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हो रही थी, लोगों की कमाई बढ़ रही थी, युवाओं के लिए नए अवसर तैयार हो रहे

थे। देश के दुश्मनों को, जम्मू-कश्मीर के दुश्मनों को, ये रास नहीं आया। आतंकी और आतंक के आका चाहते हैं, कश्मीर फिर से तबाह हो जाए और इसलिए इतनी बड़ी साजिश को अंजाम दिया। आतंकवाद के खिलाफ़ इस युद्ध में देश की एकता, 140 करोड़ भारतीयों की एकजुटता, हमारी सबसे बड़ी ताकत है। यही एकता, आतंकवाद के खिलाफ़ हमारी निर्णायक लड़ाई का आधार है। **हमें देश के सामने आई इस चुनौती का सामना करने के लिए अपने संकल्पों को मजबूत करना है। हमें एक राष्ट्र के रूप में दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रदर्शन करना है। आज दुनिया देख रही है, इस आतंकी हमले के बाद पूरा देश एक स्वर में बोल रहा है।**

साथियो, भारत के हम लोगों में जो आक्रोश है, वो आक्रोश पूरी दुनिया में है। इस आतंकी हमले के बाद लगातार दुनिया-भर से संवेदनाएँ आ रही हैं। मुझे भी Global leaders ने phone किए हैं, पत्र लिखे हैं, संदेश भेजे हैं। इस जघन्य तरीके से किए गए आतंकी हमले की सब ने कठोर निंदा की है। उन्होंने मृतकों के परिवारजनों के प्रति संवेदनाएँ प्रकट की हैं। **पूरा विश्व, आतंकवाद के खिलाफ़ हमारी लड़ाई में, 140 करोड़ भारतीयों के साथ खड़ा है। मैं पीड़ित परिवारों को फिर भरोसा देता हूँ उन्हें न्याय मिलेगा, न्याय मिलकर रहेगा। इस हमले के दोषियों और साजिश रचने वालों को कठोरतम् जवाब दिया जाएगा।**

साथियो, दो दिन पहले हमने देश के

नवाचार, शिक्षा और अंतरिक्ष

महान वैज्ञानिक डॉ. के. कस्तूरीरंगनजी को खो दिया है। जब भी कस्तूरीरंगनजी से मुलाकात हुई, हम भारत के युवाओं के talent, आधुनिक शिक्षा, space-science ऐसे विषयों पर काफी चर्चा करते थे। **विज्ञान, शिक्षा और भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊँचाई देने में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। उनके नेतृत्व में ISRO को एक नई पहचान मिली।** उनके मार्गदर्शन में जो space programme आगे बढ़े, उससे भारत के प्रयासों को global मान्यता मिली। आज भारत जिन satellites का उपयोग करता है, उनमें से कई डॉ. कस्तूरीरंगन की देख-रेख में ही launch की गई थीं। उनके व्यक्तित्व की एक और बात बहुत खास थी, जिससे युवा-पीढ़ी उनसे सीख सकती है। उन्होंने हमेशा innovation को महत्त्व दिया। कुछ नया सीखने, जानने और नया करने का vision बहुत प्रेरित करने वाला है। डॉ. के. कस्तूरीरंगनजी ने देश की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति तैयार करने में भी बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी। **डॉ. कस्तूरीरंगन, 21वीं सदी की आधुनिक ज़रूरतों के मुताबिक forward looking education का विचार लेकर आए थे।** देश की नि:स्वार्थ सेवा और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। मैं डॉ. के. कस्तूरीरंगनजी को विनम्र भाव से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, इसी महीने अप्रैल में आर्यभट्ट Satellite की launching के 50 वर्ष पूरे हुए हैं। आज जब हम पीछे

मुड़कर देखते हैं, 50 वर्षों की इस यात्रा को याद करते हैं - तो लगता है हमने कितनी लम्बी दूरी तय की है। अंतरिक्ष में भारत के सपनों की ये उड़ान एक समय केवल हौसलों से शुरू हुई थी। राष्ट्र के लिए कुछ कर गुजरने का जज़्बा पाले कुछ युवा वैज्ञानिक - उनके पास न तो आज जैसे आधुनिक संसाधन थे, न ही दुनिया की Technology तक वैसी पहुँच थी - अगर कुछ था तो वो था, प्रतिभा, लगन, मेहनत और देश के लिए कुछ करने का जज़्बा। बैलगाड़ियों और साइकिलों पर Critical Equipment को खुद लेकर जाते हमारे वैज्ञानिकों की तस्वीरों को आपने भी देखा होगा। उसी लगन और राष्ट्रसेवा की भावना का नतीजा है कि आज इतना कुछ बदल गया है। **आज भारत एक Global Space Power बन चुका है। हमने एक साथ 104 Satellite का Launch करके Record बनाया है। हम चन्द्रमा के South Pole पर पहुँचने वाले पहले देश बने हैं। भारत ने Mars Orbiter Mission Launch किया है और हम आदित्य - L1 Mission के जरिए सूरज के काफी करीब तक पहुँचे हैं। आज भारत पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा cost effective लेकिन Successful Space Program का नेतृत्व कर रहा है।** दुनिया के कई देश अपनी Satellites और

INDIA ENTERS SPACE AGE

Satellite sent into orbit from USSR

India insists on comprehensive deal with EEC

Space Mission के लिए ISRO की मदद लेते हैं।

साथियो, हम जब ISRO द्वारा किसी Satellite का launch देखते हैं तो हम गर्व से भर जाते हैं। ऐसी ही अनुभूति मुझे तब हुई जब मैं 2014 में PSLV-C-23 की launching का साक्षी बना था। 2019 में Chandrayaan-2 की landing के दौरान भी, मैं बेंगलुरु के ISRO Center में मौजूद था। उस समय Chandrayaan को वो अपेक्षित सफलता नहीं मिली थी, तब वैज्ञानिकों के लिए वो बहुत मुश्किल घड़ी थी। लेकिन मैं अपनी आँखों से वैज्ञानिकों के धैर्य और कुछ कर गुजरने का जज़्बा भी देख रहा था। और कुछ साल बाद पूरी दुनिया ने भी देखा कैसे उन्हीं वैज्ञानिकों ने Chandrayaan-3 को सफल करके दिखाया।

साथियो, अब भारत ने अपने Space Sector को Private Sector के लिए भी Open कर दिया है। आज बहुत से युवा Space Startup में नए झंडे लहरा रहे हैं। **10 साल पहले इस क्षेत्र में सिर्फ एक Company थी, लेकिन आज देश में, सवा तीन सौ से ज्यादा Space Startup काम कर रहे हैं।** आने वाला समय Space में बहुत

सारी नई सम्भावनाएँ लेकर आ रहा है। **भारत नई ऊँचाइयों को छूने वाला है। देश गगनयान, SpaDeX और Chandrayaan-4 जैसे कई अहम मिशन की तैयारियों में जुटा है। हम Venus Orbiter Mission और Mars Lander Mission पर भी काम कर रहे हैं।** हमारे Space Scientists अपने Innovations से देशवासियों को नए गर्व से भरने वाले हैं।

साथियो, पिछले महीने म्यांमार में आए भूकम्प की खौफनाक तस्वीरें आपने ज़रूर देखी होंगी। भूकम्प से वहाँ बहुत बड़ी तबाही आई, मलबे में फंसे लोगों के लिए एक-एक सांस, एक-एक पल कीमती था। इसलिए **भारत ने म्यांमार के हमारे भाई-बहनों के लिए तुरंत Operation Brahma शुरू किया।** Air force के aircraft से लेकर Navy के ships तक म्यांमार की मदद के लिए रवाना हो गए। **वहाँ भारतीय टीम ने एक field hospital तैयार किया। इंजीनियरों की एक टीम ने अहम इमारतों और infrastructures को हुए नुकसान का आकलन करने में मदद की। भारतीय team ने वहाँ कंबल, tent, sleeping bags, दवाइयाँ, खाने-पीने के सामान के साथ ही और भी बहुत सारी चीजों की supply की।** इस दौरान भारतीय टीम को वहाँ के लोगों से बहुत सारी तारीफ़ भी मिली।

साथियो, इस संकट में, साहस, धैर्य और सूझ-बूझ के कई दिल छू जाने वाले उदाहरण सामने आए। भारत की टीम ने 70 वर्ष से ज्यादा उम्र की एक बुजुर्ग महिला को बचाया जो मलबे में

18 घंटों से दबी हुई थी। जो लोग अभी TV पर 'मन की बात' देख रहे हैं, उन्हें उस बुजुर्ग महिला का चेहरा भी दिख रहा होगा। भारत से गई टीम ने उनके oxygen level को stable करने से लेकर fracture के treatment तक, इलाज की हर सुविधा उपलब्ध कराई। जब इस बुजुर्ग महिला को अस्पताल से छुट्टी मिली तो उन्होंने हमारी टीम का बहुत आभार जताया। वो बोली कि भारतीय बचाव दल की वजह से उन्हें नया जीवन मिला है। बहुत से लोगों ने हमारी टीम को बताया कि उनकी वजह से वो अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को ढूँढ पाए।

साथियो, भूकम्प के बाद म्यांमार में मांडले की एक monastery में भी कई लोगों के फंसे होने की आशंका थी। हमारे साथियों ने यहाँ भी राहत और बचाव अभियान चलाया, इसकी वजह से उन्हें बौद्ध भिक्षुओं का ढेर सारा आशीर्वाद मिला। हमें Operation Brahma में हिस्सा लेने वाले सभी लोगों पर बहुत गर्व है। **हमारी परम्परा है, हमारे संस्कार हैं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना - पूरी दुनिया एक परिवार है। संकट के समय विश्व-मित्र के रूप में भारत की तत्परता और मानवता के लिए भारत की प्रतिबद्धता हमारी पहचान बन रही है।**

साथियो, मुझे अफ्रीका के Ethiopia में प्रवासी भारतीयों के एक अभिनव प्रयास का पता चला है। Ethiopia में रहने वाले भारतीयों ने ऐसे बच्चों को इलाज के लिए भारत भेजने की पहल की है जो जन्म

से ही हृदय की बीमारी से पीड़ित हैं। ऐसे बहुत से बच्चों की भारतीय परिवारों द्वारा आर्थिक मदद भी की जा रही है। अगर किसी बच्चे का परिवार पैसे की वजह से भारत आने में असमर्थ है, तो इसका भी इंतजाम हमारे भारतीय भाई-बहन कर रहे हैं। कोशिश ये है कि गम्भीर बीमारी से जूझ रहे Ethiopia के हर जरुरतमन्द बच्चे को बेहतर इलाज मिले। प्रवासी भारतीयों के इस नेक कार्य को Ethiopia में भरपूर सराहना मिल रही है। आप जानते हैं कि भारत में मेडिकल सुविधाएँ लगातार बेहतर हो रही हैं। इसका लाभ दूसरे देश के नागरिक भी उठा रहे हैं।

साथियो, कुछ ही दिन पहले भारत ने अफगानिस्तान के लोगों के लिए बड़ी मात्रा में vaccine भी भेजी है। ये Vaccine Rabies, Tetanus, Hepatitis B और Influenza जैसी खतरनाक बीमारियों से बचाव में काम आएगी। भारत ने इसी हफ्ते नेपाल के आग्रह पर वहाँ दवाईयाँ और vaccine की बड़ी खेप भेजी है। इनसे thalassemia और sickle cell disease के मरीजों को बेहतर इलाज सुनिश्चित होगा। **जब भी मानवता की सेवा की बात आती है, तो भारत, हमेशा इसमें आगे रहता है और भविष्य में भी ऐसी हर ज़रूरत में हमेशा आगे रहेगा।**

साथियो, अभी हम Disaster Management की बात कर रहे थे। और **किसी भी प्राकृतिक आपदा से निपटने में बहुत अहम होती है -आपकी alertness, आपका सचेत रहना। इस alertness में अब आपको अपने मोबाइल के एक स्पेशल APP से मदद मिल सकती है।** ये APP आपको किसी प्राकृतिक आपदा में फँसने से बचा सकते हैं और इसका नाम भी है 'सचेत'। **'सचेत APP', भारत की National Disaster Management Authority (NDMA) ने तैयार किया है।** बाढ़, Cyclone, Land-slide, Tsunami, जंगलों की आग, हिम-स्खलन, आंधी, तूफान या फिर बिजली गिरने जैसी आपदाएँ हों, 'सचेत APP' आपको हर प्रकार से informed और protected रखने का प्रयास करता है। **इस APP के माध्यम से आप मौसम विभाग से जुड़े updates प्राप्त कर सकते हैं। खास बात ये है कि 'सचेत APP' क्षेत्रीय भाषाओं में भी कई सारी जानकारियाँ उपलब्ध कराता है।** इस APP का आप भी फायदा उठाएँ और अपने अनुभव हमसे ज़रूर साझा करें।

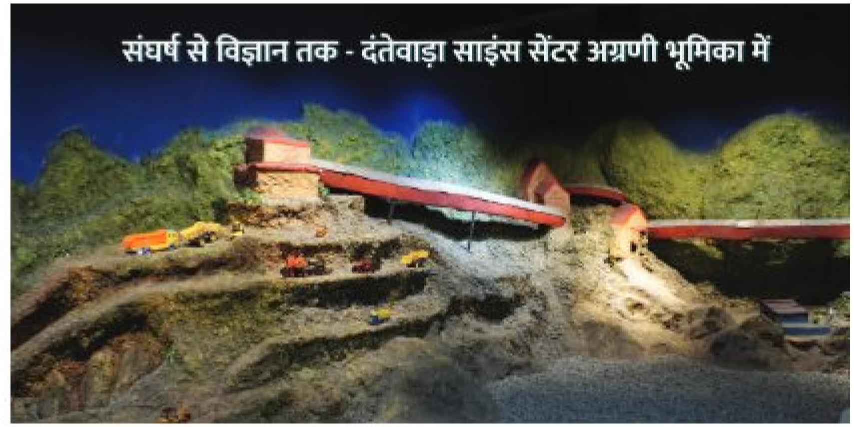

मेरे प्यारे देशवासियो, आज हम पूरी दुनिया में भारत के talent की तारीफ़ होते देखते हैं। भारत के युवाओं ने भारत के प्रति दुनिया का नज़रिया बदल दिया है, और किसी भी देश के युवा की रुचि किस तरफ है, किधर है, उससे पता चलता है कि देश का भविष्य कैसा होगा। आज भारत का युवा Science, Technology और Innovation की ओर बढ़ रहा है। ऐसे इलाके, जिनकी पहचान पहले पिछड़ेपन और दूसरे कारणों से होती थी, वहाँ भी युवाओं ने ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए हैं, जो हमें नया विश्वास देते हैं। **छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा का विज्ञान केन्द्र आजकल सबका ध्यान खींच रहा है। कुछ समय पहले तक दंतेवाड़ा का नाम केवल हिंसा और अशान्ति के लिए जाना जाता था, लेकिन अब वहाँ एक Science Centre बच्चों और उनके माता-पिता के लिए उम्मीद की नई किरण बन गया है।** इस Science Centre में जाना बच्चों को खूब पसंद आ

रहा है। वे अब नई-नई मशीनें बनाने से लेकर technology का उपयोग करके नए products बनाना सीख रहे हैं। उन्हें 3D printers और robotic कारों के साथ ही दूसरी innovative चीजों के बारे में जानने का मौका मिला है। अभी कुछ समय पहले मैंने गुजरात Science City में भी Science Galleries का उद्घाटन किया था। इन galleries से ये झलक मिलती है कि आधुनिक विज्ञान का potential क्या है, विज्ञान हमारे लिए कितना कुछ कर सकता है। मुझे जानकारी मिली है कि इन galleries को लेकर वहाँ बच्चों में बहुत उत्साह है। **Science और Innovation के प्रति ये बढ़ता आकर्षण ज़रूर भारत को नई ऊँचाई पर ले जाएगा।**

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे देश की सबसे बड़ी ताकत हमारे 140 करोड़ नागरिक हैं, उनका सामर्थ्य है, उनकी इच्छा शक्ति है, और जब करोड़ों लोग, एक-साथ किसी अभियान से जुड़ जाते हैं, तो उसका प्रभाव बहुत बड़ा होता है। **इसका एक उदाहरण है 'एक पेड़ माँ के नाम'।** ये अभियान उस माँ के नाम है, जिसने हमें जन्म दिया और ये उस धरती माँ के लिए भी है, जो हमें अपनी गोद में धारण किए रहती है। **साथियो, 5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' पर इस अभियान के एक साल पूरे हो रहे हैं। इस एक साल में इस अभियान के तहत देश-भर में माँ के नाम पर 140 करोड़ से ज़्यादा पेड़ लगाए गए हैं।** भारत की इस पहल को देखते हुए, देश के बाहर भी लोगों ने अपनी माँ के नाम पर पेड़ लगाए हैं। आप भी इस अभियान का हिस्सा बनें, ताकि एक साल पूरा होने पर, अपनी भागीदारी पर आप गर्व कर सकें।

साथियो, पेड़ों से शीतलता मिलती है, पेड़ों की छाँव में गर्मी से राहत मिलती है, ये हम सब जानते हैं लेकिन बीते दिनों मैंने इसी से जुड़ी एक और ऐसी खबर देखी जिसने मेरा ध्यान खींचा। गुजरात के अहमदाबाद शहर में पिछले कुछ वर्षों में 70 लाख से ज़्यादा पेड़ लगाए गए हैं। इन पेड़ों ने अहमदाबाद में green area काफी बढ़ा दिया है। इसके साथ-साथ, साबरमती नदी पर River Front बनने से और कांकरिया झील जैसे कुछ झीलों के पुनर्निर्माण से यहाँ water bodies की संख्या भी बढ़ गई है। अब news reports कहती हैं कि बीते कुछ वर्षों में अहमदाबाद global warming से लड़ाई लड़ने वाले प्रमुख शहरों में से एक हो गया है। इस बदलाव को, वातावरण में आई शीतलता को, वहाँ के लोग भी महसूस कर रहे हैं। अहमदाबाद में लगे पेड़ वहाँ नई खुशहाली लाने की वजह बन रहे हैं। मेरा **आप सबसे फिर आग्रह है कि धरती की सेहत ठीक रखने के लिए Climate Change की चुनौतियों से निपटने के लिए और अपने बच्चों का भविष्य सुरक्षित करने के लिए पेड़ ज़रूर लगाएँ 'एक पेड़ - माँ के नाम'।**

साथियो, एक बड़ी पुरानी कहावत है 'जहाँ चाह-वहाँ राह'। जब हम कुछ नया करने की ठान लेते हैं, तो मंजिल भी ज़रूर मिलती है। आपने पहाड़ों में उगने वाले सेब तो खूब खाए होंगे। लेकिन, अगर मैं पूछूँ कि क्या आपने कर्नाटक के सेब का स्वाद चखा है? तो आप हैरान हो जाएँगे। आमतौर पर हम समझते हैं कि सेब की पैदावार पहाड़ों में ही होती है। लेकिन कर्नाटक के बागलकोट में रहने

वाले श्री शैल तेलीजी ने मैदानों में सेब उगा दिया है। उनके कुलाली गाँव में 35 डिग्री से ज़्यादा तापमान में भी सेब के पेड़ फल देने लगे हैं। दरअसल श्री शैल तेली को खेती का शौक था तो उन्होंने सेब की खेती को भी आजमाने की कोशिश की और उन्हें इसमें सफलता भी मिल गई। आज उनके लगाए सेब के पेड़ों पर काफी मात्रा में सेब उगते हैं जिसे बेचने से उन्हें अच्छी कमाई भी हो रही है।

साथियो, अब जब सेबों की चर्चा हो रही है, तो आपने किन्नौरी सेब का नाम ज़रूर सुन होगा। सेब के लिए मशहूर किन्नौर में केसर का उत्पादन होने लगा है। आमतौर पर हिमाचल में केसर की खेती कम ही होती थी, लेकिन अब किन्नौर की खूबसूरत सांगला घाटी में भी केसर की खेती होने लगी। ऐसा ही एक उदाहरण केरल के वायनाड का है। यहाँ भी केसर उगाने में सफलता मिली है, और वायनाड में ये केसर किसी खेत या मिट्टी में नहीं बल्कि Aeroponics Technique से उगाए जा रहे हैं। कुछ ऐसा ही हैरत भरा काम लीची की पैदावार के साथ हुआ है। हम तो सुनते आ रहे थे कि लीची बिहार, पश्चिम बंगाल या झारखंड में उगती है, लेकिन अब लीची का उत्पादन दक्षिण भारत और राजस्थान में भी हो रहा है। तमिलनाडु के थिरु वीरा अरासु कॉफी की खेती करते थे। कोडईकनाल में उन्होंने लीची के पेड़ लगाए और उनकी 7 साल की मेहनत के बाद अब उन पेड़ों पर फल आने लगे। लीची उगाने में मिली सफलता ने आस-पास के दूसरे किसानों को भी प्रेरित किया है। राजस्थान में जितेन्द्र सिंह राणावत

को लीची उगाने में सफलता मिली है। ये सभी उदाहरण बहुत प्रेरित करने वाले हैं। अगर हम कुछ नया करने का इरादा कर लें, और मुश्किलों के बावजूद डटे रहें, तो असम्भव को भी सम्भव किया जा सकता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज अप्रैल का आखिरी रविवार है। कुछ ही दिनों में मई का महीना शुरू हो रहा है। **मैं आपको आज से करीब 108 साल पहले लेकर चलता हूँ। साल 1917, अप्रैल और मई के यही दो महीने - देश में आजादी की एक अनोखी लड़ाई लड़ी जा रही थी।** अंग्रेजों के अत्याचार उफ़ान पर थे। गरीबों, वंचितों और किसानों का शोषण अमानवीय स्तर को भी पार कर चुका था। बिहार की उपजाऊ धरती पर ये अंग्रेज किसानों को नील की खेती के लिए मजबूर कर रहे थे। नील की खेती से किसानों के खेत बंजर हो रहे थे, लेकिन अंग्रेजी हुकूमत को इससे कोई मतलब नहीं था। ऐसे हालात में, 1917 में गाँधीजी बिहार के चम्पारण पहुँचे हैं। किसानों ने गाँधीजी को बताया - हमारी ज़मीन मर रही है, खाने के लिए अनाज नहीं मिल रहा है। लाखों किसानों की उस पीड़ा से गाँधीजी के मन में एक संकल्प उठा। वहीं

स्वतंत्रता को वीरता से सींचने की कहानी

से चम्पारण का ऐतिहासिक सत्याग्रह शुरू हुआ। **'चम्पारण सत्याग्रह', ये बापू द्वारा भारत में पहला बड़ा प्रयोग था। बापू के सत्याग्रह से पूरी अंग्रेज हुकूमत हिल गई।** अंग्रेजों को नील की खेती के लिए किसानों को मजबूर करने वाले कानून को स्थगित करना पड़ा। ये एक ऐसी जीत थी जिसने आज़ादी की लड़ाई में नया विश्वास फूँका। **आप सब जानते होंगे इस सत्याग्रह में बड़ा योगदान बिहार के एक और सपूत का भी था, जो आज़ादी के बाद देश के पहले राष्ट्रपति बने। वो महान विभूति थे- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद। उन्होंने 'चम्पारण सत्याग्रह' पर एक किताब भी लिखी- 'Satyagraha in Champaran', ये किताब हर युवा को पढ़नी चाहिए।** भाईयो-बहनो, अप्रैल में ही स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई के कई और अमिट अध्याय जुड़े हुए हैं। **अप्रैल की 6 तारीख को ही गाँधीजी की 'दांडी यात्रा' संपन्न हुई थी।** 12 मार्च से शुरू होकर 24 दिनों तक चली इस यात्रा ने अंग्रेजों को झकझोर कर रख दिया था। **अप्रैल में ही जलियाँवाला बाग नरसंहार हुआ था।** पंजाब की धरती पर इस रक्तरंजित इतिहास के निशान आज भी मौजूद हैं।

साथियो, कुछ ही दिनों में, 10 मई को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की वर्षगाँठ भी आने वाली है। आज़ादी की उस पहली लड़ाई में जो चिंगारी उठी थी, वो आगे चलकर लाखों सेनानियों के लिए मशाल बन गई। **अभी 26 अप्रैल को हमने 1857 की क्रांति के महान नायक बाबू वीर कुँवर सिंहजी की पुण्यतिथि भी मनाई है। बिहार के महान सेनानी से पूरे देश को प्रेरणा मिलती है।** हमें ऐसे ही लाखों स्वतंत्रता सेनानियों की अमर प्रेरणाओं को जीवित रखना है। हमें उनसे जो ऊर्जा मिलती है, वो अमृतकाल के हमारे संकल्पों को नई मज़बूती देती है।

साथियो, 'मन की बात' की इस लम्बी यात्रा में आपने इस कार्यक्रम के साथ एक आत्मीय रिश्ता बना लिया है। देशवासी जो उपलब्धियाँ दूसरों से साझा करना चाहते हैं उसे 'मन की बात' के माध्यम से लोगों तक पहुँचाते हैं। अगले महीने हम फिर मिलकर देश की विविधताओं, गौरवशाली परम्पराओं और नई उपलब्धियों की बात करेंगे। हम ऐसे लोगों के बारे में जानेंगे जो अपने समर्पण और सेवा भावना से समाज में बदलाव ला रहे हैं। हमेशा की तरह आप हमें अपने विचार और सुझाव भेजते रहिए। धन्यवाद, नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

एक वैज्ञानिक दृष्टा का अवसान : डॉ. के. कस्तूरीरंगन

डॉ. कृष्णास्वामी कस्तूरीरंगन (1940-2025), भारत की अंतरिक्ष यात्रा के एक महानायक थे, जिनकी कहानी सितारों जड़ी है। उच्च ऊर्जा खगोलशास्त्र में डॉक्टरेट करने वाले डॉ. कस्तूरीरंगन ने भारत की पहली प्रमुख अंतरिक्ष वेधशाला की संकल्पना विकसित करने में अहम भूमिका निभाई और INSAT-2 तथा भारतीय रिमोट सेंसिंग सैटेलाइट्स (IRS-1A और 1B) के प्रक्षेपण के पीछे की प्रेरणाशक्ति रहे।

1994 से 2003 तक ISRO के अध्यक्ष के रूप में सेवा करते हुए, उन्होंने PSLV और GSLV जैसे प्रक्षेपण यानों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया, जिसने भारत के बाद के ग्रहों से जुड़े अभियानों की नींव रखी। ISRO से परे, वे योजना आयोग के सदस्य और बाद में राज्यसभा के मनोनीत सांसद रहे, जहाँ उन्होंने शासन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया।

डॉ. कस्तूरीरंगन ने एक ऐसे शैक्षणिक परिदृश्य की कल्पना की जो भविष्य के लिए तैयार हो, जहाँ आलोचनात्मक सोच और वैज्ञानिक जिज्ञासा केन्द्र में हो। एक सच्चे नवप्रवर्तक के रूप में उन्होंने युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया और जिज्ञासा की संस्कृति को बढ़ावा दिया।

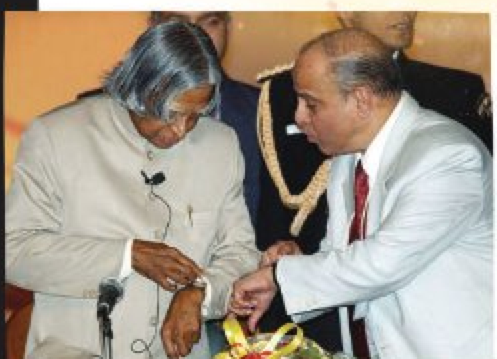

वह नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़ के निदेशक रहे और बाद में उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रारूप समिति की अध्यक्षता की जिसमें उन्होंने वैज्ञानिक सोच और भविष्यवादी दृष्टिकोण का समावेश किया। पद्म विभूषण से सम्मानित डॉ. कस्तूरीरंगन को भारत की तीनों प्रमुख विज्ञान अकादमियों और इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ एस्ट्रोनॉटिक्स में सदस्यता प्राप्त थी।

उनका दृष्टिकोण ब्रह्मांडीय अवलोकन से लेकर कक्षा में होने वाले प्रयोगों तक असीमित था। भारत एक सच्चे अंतरिक्ष संत के निधन पर शोक मना रहा है, जिनकी उपलब्धियाँ हमारी आकांक्षाओं का मार्ग प्रशस्त करती रहेंगी।

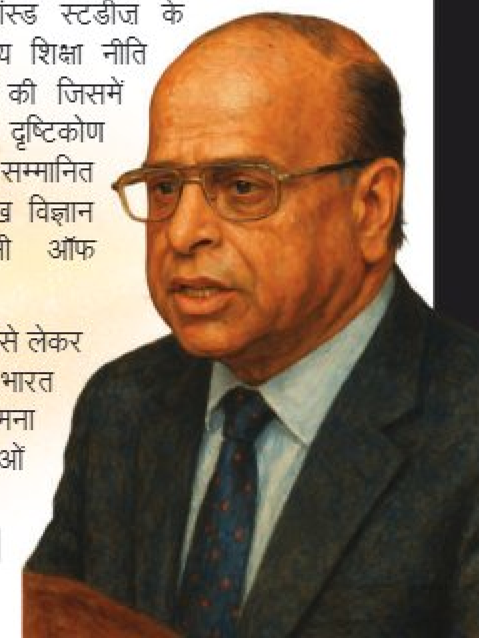

बैलगाड़ियों से लेकर सितारों के पार तक

अंतरिक्ष में भारत की 50 वर्षों की यात्रा

“मेरे प्यारे देशवासियो, इसी महीने अप्रैल में आर्यभट्ट Satellite की launching के 50 वर्ष पूरे हुए हैं। आज जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, 50 वर्षों की इस यात्रा को याद करते हैं - तो लगता है हमने कितनी लम्बी दूरी तय की है।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)”

आज भारत एक वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति बन चुका है, जैसा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अप्रैल के ‘मन की बात’ कार्यक्रम में उल्लेख किया। हमने कई विश्व रिकॉर्ड बनाए हैं - एक ही पीएसएलवी मिशन से 104 उपग्रहों का प्रक्षेपण और चन्द्रयान-3 के साथ चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सफलतापूर्वक उतरने वाला पहला देश बनने का गौरव। 2023 में लॉन्च किया गया आदित्य-L1 मिशन अब सूर्य की गतिविधियों का रियल-टाइम में अवलोकन कर रहा है, जबकि 2013 में भेजे गए मंगलयान से भारत मंगल ग्रह तक पहुँचने वाला पहला एशियाई देश बन गया। इसमें नासा की लागत के अनुपात में एक छोटा अंश लगा।

19 अप्रैल, 1975 को भारत ने अपना पहला उपग्रह ‘आर्यभट्ट’ लॉन्च कर अंतरिक्ष इतिहास में अपना नाम दर्ज किया। प्राचीन भारतीय गणितज्ञ और खगोलशास्त्री के नाम पर रखा गया यह उपग्रह सोवियत संघ के कपुस्टिन यार से कोसमोस-3M रॉकेट द्वारा प्रक्षेपित किया गया था। 360 किलोग्राम वजनी यह उपग्रह पूरी तरह भारत में डिज़ाइन और निर्मित किया गया था, जो देश के अंतरिक्ष युग की शुरुआत का प्रतीक बना।

प्रारम्भिक दिनों में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) सीमित संसाधनों के साथ कार्य कर रहा था। उस दौर की प्रसिद्ध तस्वीरें वैज्ञानिकों को बैलगाड़ियों और साइकिलों पर सैटेलाइट के पुर्जे ले जाते हुए दिखाती हैं, जो उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति और नवाचार का प्रतीक हैं। इन कठिनाइयों के बावजूद, इन अग्रणी वैज्ञानिकों के जुनून और समर्पण ने भारत की अंतरिक्ष यात्रा की मजबूत नींव रखी।

15 फरवरी, 2017 को इसरो ने पीएसएलवी-C37 के माध्यम से एक ही मिशन में 104 उपग्रह प्रक्षेपित कर विश्व रिकॉर्ड कायम किया, जिसने भारत की अंतरिक्ष तकनीक में बढ़ती दक्षता को प्रदर्शित किया।

अगस्त 2023 में भारत ने चन्द्रयान-3 की सफल लैंडिंग के साथ चन्द्र अन्वेषण में एक और कीर्तिमान स्थापित किया। यह मिशन न केवल भारत की तकनीकी क्षमता को दर्शाता है, बल्कि चन्द्रमा की सतह के बारे में महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक डाटा भी प्रदान करता है।

सितम्बर 2023 में लॉन्च हुआ आदित्य-L1 मिशन सूर्य के बाहरी परतों का अध्ययन करने के लिए समर्पित है और यह भारत की वैश्विक सौर अनुसंधान में भागीदारी को दर्शाता है।

आगे देखते हुए इसरो गगनयान मिशन की तैयारी कर रहा है। इसका उद्देश्य भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में भेजना है। यह भारत के अंतरिक्ष में किए जाने वाले मानवीय कार्यक्रमों में मील का पत्थर साबित होगा। इसके अलावा शुक्र और मंगल की आगामी मिशनों की योजनाएँ भारत की अंतरिक्ष महत्त्वाकांक्षाओं को और भी विस्तृत कर रही हैं।

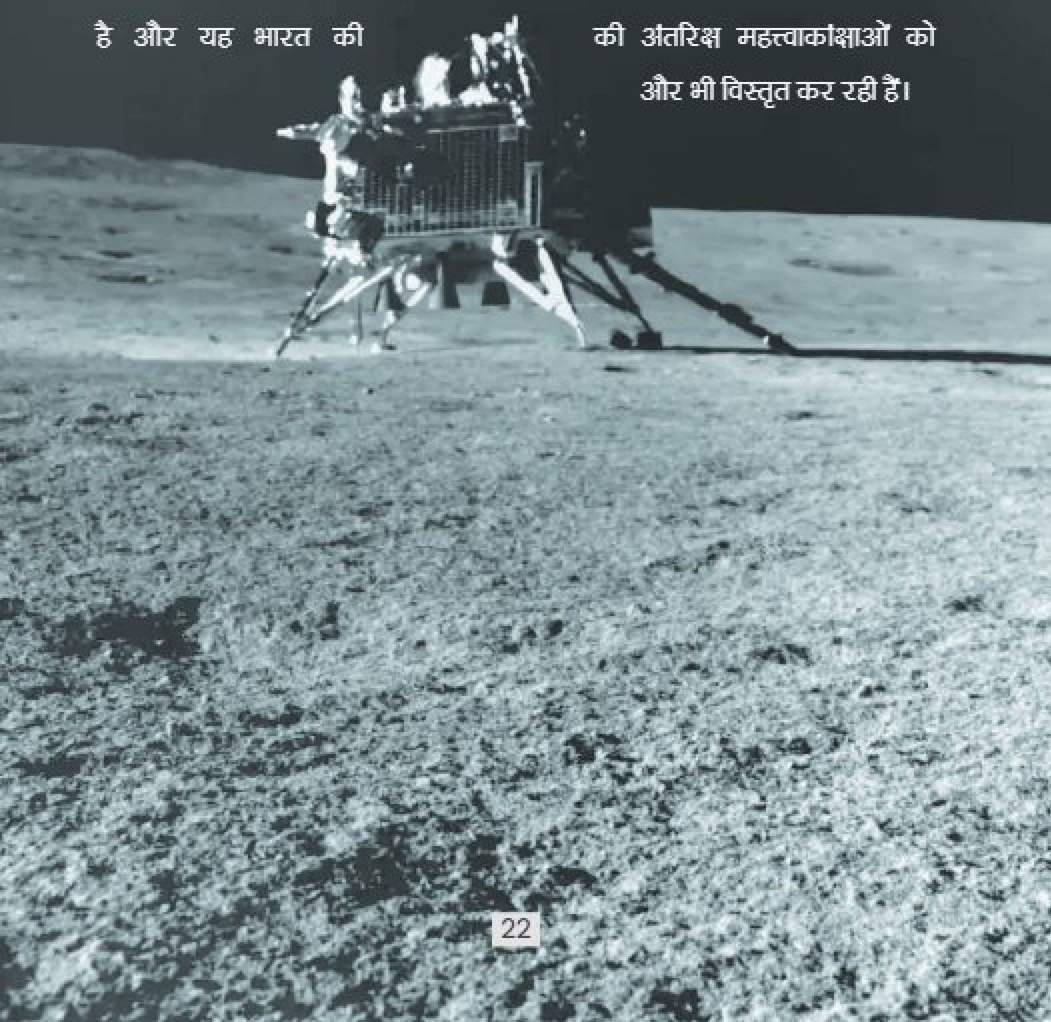

भारत की रणनीतिक अंतरिक्ष दृष्टि अब आपदा प्रबंधन, जलवायु निगरानी, ग्रामीण सम्पर्क और रक्षा जैसे राष्ट्रीय लक्ष्यों से जुड़ गई है। **RISAT, CartoSat** और **GSAT** जैसे उपग्रह कृषि योजना से लेकर डिजिटल प्रसारण तक महत्त्वपूर्ण ढाँचे का संचालन कर रहे हैं।

IN-SPACe की स्थापना और निजी कम्पनियों के लिए अंतरिक्ष क्षेत्र के खुलने से उद्यमिता को नया आयाम मिला है। आज 325 से अधिक स्पेस स्टार्टअप भारत के अगले कक्षीय अध्याय को आकार दे रहे हैं। स्कायरूट, अग्निकुल और पिक्सेल जैसे स्टार्टअप भारत में निर्मित रॉकेट से अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों के लिए प्रक्षेपण कर रहे हैं, जो घरेलू नवाचार की शक्ति को दर्शाता है।

तकनीकी उपलब्धियों से परे, भारत की अंतरिक्ष यात्रा एक सशक्तीकरण की कहानी भी है। खगोल विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान और STEM (रोबोटिक्स, ड्रोन और एआई) जैसे क्षेत्रों में विद्यालय आधारित कार्यक्रम विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले छात्रों को प्रेरित कर रहे हैं और विज्ञान के प्रति जिज्ञासा को देश के हर कोने तक पहुँचा रहे हैं।

बैलगाड़ियों से शुरू होकर सूर्य और उससे आगे तक का यह 50 वर्षों का सफ़र भारत की दृढ़ता, नवाचार और ज्ञान की अनवरत खोज का प्रतीक है। जैसे-जैसे देश अंतरिक्ष में नई ऊँचाइयों को छू रहा है, यह आने वाली पीढ़ियों को बड़े सपने देखने और असम्भव को सम्भव बनाने की प्रेरणा दे रहा है।

इसरो मिशन के नायक वैज्ञानिक

भारत की 50 वर्षों की अंतरिक्ष यात्रा केवल रॉकेट्स और उपग्रहों की कहानी नहीं है, बल्कि यह इस क्षेत्र से जुड़े लोगों की भी कहानी है। इस लेख में, हम उन समर्पित व्यक्तित्व और उनके कार्यों का सम्मान करते हैं जिन्होंने भारत को बैलगाड़ियों से चाँद के दक्षिणी ध्रुव तक पहुँचाया।

हम शुरुआत करते हैं **डॉ. विक्रम साराभाई** से, जो भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक माने जाते हैं। उन्हीं की दूरदर्शिता ने इसरो की नींव रखी।

उनकी विरासत को आगे बढ़ाया **डॉ. उडुपी रामचंद्र राव** ने, जिन्हें 'भारत के सैटेलाइट मैन' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने 1975 में भारत के पहले उपग्रह आर्यभट्ट के प्रक्षेपण की निगरानी की।

भारत के शुरुआती रॉकेट मिशनों में अहम भूमिका निभाने वालों में से एक थे **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम**, जिन्हें 'मिसाइल मैन ऑफ इंडिया' के रूप में जाना जाता है। भारत के 11वें राष्ट्रपति बनने से पहले डॉ. कलाम ने इसरो के सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (SLV) कार्यक्रम में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने SLV-III का नेतृत्व किया, जिसने 1980 में रोहिणी उपग्रह को कक्षा में स्थापित किया। यह एक ऐतिहासिक क्षण था जिसने भारत को अंतरिक्ष महाशक्तियों की सूची में शामिल कर दिया।

आधुनिक युग में **डॉ. के. राधाकृष्णन** ने इसरो का नेतृत्व उस समय किया जब भारत ने मंगलयान (Mars Orbiter Mission) की सफलता प्राप्त की और भारत मंगल ग्रह तक पहुँचने वाला पहला एशियाई देश बना।

डॉ. के. सिवन, चंद्रयान-2 की असफलता के बावजूद, उस दृढ़ता के प्रतीक बने जिसने चंद्रयान-3 की सफलता का मार्ग प्रशस्त किया।

एस. सोमनाथ, पूर्व इसरो प्रमुख ने भारत के साहसी अभियानों जैसे आदित्य-एल1, गगनयान और शुक्रयान का नेतृत्व किया।

चंद्रयान-3 का सफल प्रक्षेपण

विक्रम साराभाई, युवा ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ (बाएँ), थुम्बा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन पर, 1969

1972 में बेंगलुरु के पीन्या में आर्यभट्ट के लकड़ी के मॉडल का निरीक्षण करते हुए उडुपी रामचंद्र राव

इसरो के भारतीय वैज्ञानिक और इंजीनियर बेंगलुरु स्थित मार्स ऑर्बिटर मिशन के ट्रैकिंग सेंटर, इस्ट्रैक (टेलीमेट्री, ट्रैकिंग और कमांड नेटवर्क) में मार्स ऑर्बिटर मिशन (एमओएम) की निगरानी करते हैं।

चंद्रमा की सतह पर विक्रम लैंडर का चित्रण

वसुधैव कुटुम्बकम्

विश्व-मित्र के रूप में भारत

“हमारी परम्परा है, हमारे संस्कार हैं ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ की भावना - पूरी दुनिया एक परिवार है। संकट के समय विश्व-मित्र के रूप में भारत की तत्परता और मानवता के लिए भारत की प्रतिबद्धता हमारी पहचान बन रही है।”

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

“भारत की मानवता के प्रति प्रतिबद्धता केवल एक नीति नहीं है- यह एक वादा है। एक ऐसा वादा जो हमारे प्राचीन मूल्यों में निहित है, आधुनिक क्षमताओं में संवृत है, और हमारे लोगों की सामूहिक इच्छाशक्ति द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है। चाहे वह बचाव के लिए बढ़ाया गया एक सहायक हाथ हो, मित्रता में दी गई एक वैक्सीन हो, या बाढ़ से पहले किसी किसान को सशक्त करने वाला एक ऐप हो, भारत एक भरोसेमंद और संवेदनशील वैश्विक भागीदार के रूप में अपनी भूमिका निभाता रहा है।

-राजेन्द्र सिंह,
(पीटीएम, टीएम) सदस्य एवं विभाग प्रमुख, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

भारत का प्राचीन दर्शन ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’, जिसका अर्थ है ‘सारा विश्व एक परिवार है’, केवल एक आध्यात्मिक आदर्श नहीं है। यह एक जीवंत सिद्धांत है जो वैश्विक मंच पर भारत की कार्यनीति को दिशा देता है, और भारत को एक सच्चे विश्व-मित्र (दुनिया का मित्र) के रूप में उभरने के लिए प्रेरित करता है। चाहे महामारी हो, प्राकृतिक आपदा हो या मानवीय संकट, भारत हमेशा सबसे आगे रहा है- मदद केवल कर्तव्य के रूप में नहीं, बल्कि गहरी मानवीय संवेदना से प्रेरित होकर की गई है।

इस दर्शन की सबसे महत्त्वपूर्ण मिसाल COVID-19 महामारी के दौरान भारत की भूमिका रही। इस अभूतपूर्व वैश्विक संकट में भारत ने एकजुटता और सहानुभूति के साथ अग्रणी भूमिका निभाई। ‘वैक्सीन मैत्री’ जैसी ऐतिहासिक पहल के माध्यम से भारत ने 100 से अधिक देशों को निःशुल्क कोविड-19 वैक्सीन उपलब्ध कराई, चाहे वे देश राजनीतिक रूप से मित्र हों या नहीं, अथवा उनकी आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। यह भारत के इस विश्वास का सशक्त अभिव्यक्ति थी कि स्वास्थ्य एक सार्वभौमिक अधिकार है और देश की साझा करने एवं समर्थन करने की भावना का प्रमाण है।

भारत की मानवीय सहायता केवल वैक्सीन तक सीमित नहीं रही। महामारी के दौरान उत्पन्न आर्थिक संकट और भुखमरी की चुनौती को देखते हुए भारत ने अफगानिस्तान, कोमोरोस, जिबूती, इरीट्रिया, लेबनान, मेडागास्कर, मलावी, मालदीव, म्यांमार, सिएरा लियोन, सूडान, दक्षिण सूडान, सीरिया, जाम्बिया, जिम्बाब्वे और अन्य कई देशों को हजारों मीट्रिक टन गेहूँ, चावल, दाल और अन्य खाद्यान्न भेजे। इन खाद्य सहायता प्रयासों ने संकट के दौर में लाखों लोगों की भूख मिटाने में मदद की।

पिछले वर्षों में भारत ने मानवीय सहायता एवं आपदा राहत (HADR) के क्षेत्र में निरंतर और दृढ़ प्रतिबद्धता दिखाई है, जिससे वह वैश्विक संकटों में एक

विश्वसनीय प्रथम प्रत्युत्तरदाता बनकर उभरा है। 2015 में नेपाल में भूकम्प के बाद ऑपरेशन मैत्री; 2016 में श्रीलंका में चक्रवात रोआनू के बाद सहायता; 2018 में इंडोनेशिया में भूकम्प राहत; ऑपरेशन सहायता के तहत मोज़ाम्बिक में चक्रवात इदई; 2020 में मेडागास्कर में बाढ़ के बाद राहत कार्य; 2023 में तुर्की और सीरिया में विनाशकारी भूकम्प के बाद ऑपरेशन दोस्त; वियतनाम में ऑपरेशन सद्भाव, म्यांमार में ऑपरेशन करुणा (चक्रवात मोचा), और 2025 में ऑपरेशन ब्रह्मा (भूकम्प राहत)।

इन सभी प्रयासों से यह स्पष्ट होता है कि वसुधैव कुटुम्बकम् केवल एक आदर्श वाक्य नहीं, बल्कि वैश्विक

सद्भाव के लिए एक कार्य-योजना है। भारत की संवेदनशील एवं त्वरित मानवीय पहलों ने यह सिद्ध किया है कि वह एक शांति, एकजुटता और साझा समृद्धि के लिए समर्पित वैश्विक शक्ति बन चुका है।

भारत की विश्व-मित्र की भूमिका एक आशा की किरण बनकर उभरी है, जो यह याद दिलाती है कि संकट की घड़ी में मानवता सीमाओं और मतभेदों से ऊपर है। यह दर्शाता है कि मित्रता और साझा उत्तरदायित्व के सूत्र हमें एक साथ जोड़ते हैं। भारत की प्राचीन बुद्धि और आधुनिक क्षमता के समन्वय से प्रेरित यह दृष्टिकोण एक अधिक करुणामय, समावेशी और एकजुट विश्व की दिशा में आगे बढ़ रहा है, जहाँ 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' की भावना साकार होती है।

भारत की मानवता के प्रति प्रतिबद्धता

आपदा प्रबंधन, वैश्विक स्वास्थ्य और सतर्कता की शक्ति

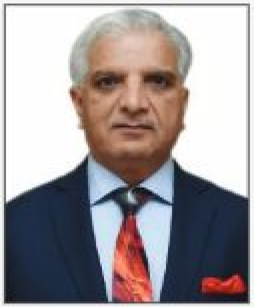

राजेन्द्र सिंह

(पीटीएम, टीएम) सदस्य एवं
विभाग प्रमुख, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

अप्रैल 2025 के 'मन की बात' कार्यक्रम में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत की उस प्राचीन सोच को दोहराया जो सदियों से हमारी संस्कृति का हिस्सा रही है- 'वसुधैव कुटुम्बकम्', अर्थात् पूरा विश्व एक परिवार है। उनके सम्बोधन में ऑपरेशन ब्रह्मा को विशेष रूप से रेखांकित किया गया, जोकि म्यांमार में आए विनाशकारी भूकम्प के बाद भारत की त्वरित और करुणामयी प्रतिक्रिया थी। यह केवल एक बचाव मिशन नहीं था, बल्कि भारत की मानवीय सहायता और आपदा प्रतिक्रिया (HADR) में बढ़ती वैश्विक नेतृत्व क्षमता का सशक्त प्रतीक था।

ऑपरेशन ब्रह्मा: म्यांमार में आशा की एक किरण

मार्च 2025 में जब म्यांमार के मध्य क्षेत्र में एक भीषण भूकम्प आया, जिससे अनेक जानें गईं और महत्त्वपूर्ण ढाँचा नष्ट हो गया, तब भारत ने तुरंत सहायता के लिए कदम बढ़ाया। केवल कुछ घंटों में राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (NDRF) की टीमें, सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा (AFMS) के चिकित्सा दल और 625 मीट्रिक टन से अधिक राहत सामग्री म्यांमार भेजी गई। ब्रह्मा नाम के इस मिशन का संचालन NDMA, विदेश मंत्रालय (MEA) और रक्षा मंत्रालय (MoD) के संयुक्त नेतृत्व में किया गया। म्यांमार सरकार के अनुरोध पर भारत ने खतरे में पड़ी इमारतों को सुरक्षित ढंग से गिराने के लिए तकनीकी मार्गदर्शन दिया और भूकम्प-प्रभावित पुलों की संरचनात्मक स्थिरता का आकलन करने में भी मदद की। यह मिशन भारत की तकनीकी दक्षता, लॉजिस्टिक क्षमता और नैतिक प्रतिबद्धता का प्रमाण था कि संकट की घड़ी में भारत अपने पड़ोसियों के साथ मजबूती से खड़ा है।

ऐसे पल जिन्होंने दुनिया को झकझोर दिया

ऑपरेशन ब्रह्मा के दौरान कई हृदयस्पर्शी क्षण सामने आए। भारत की बचाव टीमों द्वारा बागान शहर में मलबे से जीवित लोगों को बाहर निकालते देखना, अनाथ हुए बच्चों को दिलासा देना और दुर्गम इलाकों में म्यांमार प्रशासन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करना, ये सभी दृश्य मानवीयता की मिसाल बन गए। एक विशेष घटना ने सभी का दिल छू लिया- मलबे में फँसी एक छह वर्षीय बच्ची को 40 घंटे के बाद बचाया गया। जब वह अपनी माँ से मिलकर मुस्कुराई, तो बचावकर्मियों की आँखें नम हो गईं। अनेक कहानियाँ भारत के पेशेवर कौशल और संवेदनशीलता का अद्वितीय संगम दर्शाते हैं।

ये कार्य भारत की सामान्य नीति नहीं, बल्कि सभ्यता की पुकार है। चाहे नेपाल (2015), मोज़ाम्बिक (2019), तुर्किये (2023) या म्यांमार (2025) हो, भारत की आपदा प्रतिक्रिया केवल सैन्य एयरलिफ्ट या राहत वितरण तक सीमित नहीं है, यह मानवता के लिए संवेदना और संकल्प की कहानी है।

मुस्तैदी : भारत की मानवीय नेतृत्व क्षमता की नींव

भारत की इस प्रकार की त्वरित और प्रभावी प्रतिक्रिया कोई संयोग नहीं है, बल्कि यह वर्षों की संयोजित और संगठित तैयारी का परिणाम है।

राष्ट्रीय दिशा-निर्देशों से लेकर 'आपदा मित्र' जैसी स्थानीय स्वयंसेवी योजनाओं, प्रारम्भिक चेतावनी प्रणालियों से लेकर Unified Alert Management System (UAMS) जैसे तकनीकी प्लेटफ़ॉर्म तक, भारत ने एक मजबूत और बहुस्तरीय आपदा प्रबंधन ढाँचा खड़ा किया है। यही तंत्र भारत को सक्षम बनाता है कि वह अपने नागरिकों की रक्षा के साथ-साथ अन्य देशों की सहायता भी कर सके।

सीमा पार चिकित्सक : भारत की वैश्विक स्वास्थ्य कूटनीति

भारत की विदेश नीति में मानवीय चिकित्सा सहायता भी एक अहम स्तंभ

है। कोविड-19 महामारी के दौरान भारत ने 'विश्व की फार्मेसी' के रूप में भूमिका निभाई, जब उसने 100 से अधिक देशों को 240 मिलियन से अधिक मेड-इन-इंडिया टीके भेजे। यह परम्परा आज भी जारी है।

हाल ही के महीनों में भारत ने अफ़गानिस्तान, नेपाल और पूर्वी अफ़्रीका के कई क्षेत्रों में आवश्यक दवाइयाँ, सर्जिकल सामग्री और स्वास्थ्य किट भेजीं। इथियोपिया में भारतीय प्रवासी डॉक्टरों ने ओवरलोडेड अस्पतालों में सेवा दी, जिससे स्थानीय समुदायों में गहरी कृतज्ञता देखने को मिली। यह केवल कूटनीति नहीं, बल्कि भारत की समग्र वैश्विक स्वास्थ्य दृष्टि का प्रमाण है।

'सचेत' ऐप : सतर्कता का डिजिटल साथी

भारत में आपदा प्रबंधन को तकनीक आधारित और जन-केन्द्रित बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है 'सचेत ऐप'। NDMA द्वारा विकसित यह मोबाइल ऐप नागरिकों को भूकम्प, बाढ़, चक्रवात, बिजली गिरने जैसी आपदाओं की पूर्व चेतावनी, आपातकालीन सम्पर्क, और सुरक्षा से जुड़े निर्देश प्रदान करता है। यह ऐप न केवल जानकारी देता है, बल्कि लोगों को सक्षम बनाता है, ताकि वे केवल प्रतिक्रिया न करें, बल्कि पहले से तैयार रहें। प्रधानमंत्री द्वारा 'सचेत' ऐप को अपनाने की अपील यह स्मरण कराती है कि तैयारी केवल सरकार की नहीं, हर नागरिक की जिम्मेदारी है।

तालिका : पड़ोसी देशों में भारत की चिकित्सा सहायता (2023-2025)

देश	प्रदत्त सहायता	वर्ष
अफगानिस्तान	आवश्यक दवाइयाँ, फील्ड- हॉस्पिटल	2024-25
नेपाल	एंटीवायरल दवाएँ, मातृ स्वास्थ्य किट	2023-24
इथियोपिया	स्वयंसेवी मेडिकल टीमें, सर्जिकल सहायता	2025
श्रीलंका	कोविड-19 टीके, कैंसर की दवाइयाँ	2023

(स्रोत: विदेश मंत्रालय, भारत सरकार)

एक वैश्विक मॉडल : 21वीं सदी का भारत

भारत का आपदा राहत और स्वास्थ्य सहायता मॉडल अब दुनिया भर में एक आदर्श प्रणाली के रूप में देखा जा रहा है। यह नीति, तकनीक, जनभागीदारी और क्षेत्रीय सहयोग का ऐसा सम्मिलन है जो भारत की 1.4 अरब की जनसंख्या के साथ-साथ एक संवेदनशील सभ्यता की आत्मा को भी दर्शाता है।

ग्राम पंचायत के स्तर पर 'आपदा मित्र', UAMS, और सेंदाई फ्रेमवर्क के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय सहयोग जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से भारत सतत उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है।

भारत की मानवतावादी छवि (2020-2025)

एक ऐसी दुनिया में जहाँ जलवायु-जनित आपदाएँ, महामारियाँ और मानवीय संकट लगातार बढ़ रहे हैं, भारत का संदेश स्पष्ट है : हमें तैयार रहना चाहिए, हमें सहानुभूतिशील होना चाहिए और हमें एक साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। ऑपरेशन ब्रह्मा ने यह साबित कर दिया कि जब देश तेज़ी से और निःस्वार्थ भाव से कार्य करते हैं, तो जीवन बचते हैं, आशा पुनर्जीवित होती है, और सम्बंध मज़बूत होते हैं।

निष्कर्ष : सीमाओं से परे एक वादा

भारत की मानवता के प्रति प्रतिबद्धता केवल एक नीति नहीं है- यह एक वादा है। एक ऐसा वादा जो हमारे प्राचीन मूल्यों में निहित है, आधुनिक क्षमताओं से संवृत है, और हमारे लोगों की सामूहिक इच्छाशक्ति द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है।

चाहे वह बचाव के लिए बढ़ाया गया एक सहायक हाथ हो, मित्रता में दी गई एक वैक्सीन हो, या बाढ़ से पहले किसी किसान को सशक्त करने वाला एक ऐप हो, भारत एक भरोसेमंद और संवेदनशील वैश्विक भागीदार के रूप में अपनी भूमिका निभाता रहा है।

जैसा कि प्रधानमंत्री ने सही ही कहा है, 'विश्व एक परिवार है', और भारत अपने इस परिवार के लिए हमेशा खड़ा रहेगा, अपने दिलों में साहस के साथ, अपने कार्यों में करुणा के साथ, और अपनी योजनाओं की तैयारी के साथ।

सचेत

आपदा चेतावनी के लिए भरोसेमंद मोबाइल ऐप

"साथियो, अभी हम Disaster Management की बात कर रहे थे। और किसी भी प्राकृतिक आपदा से निपटने में बहुत अहम होती है -आपकी alertness, आपका सचेत रहना। इस alertness में अब आपको अपने मोबाइल के एक स्पेशल APP से मदद मिल सकती है। ये APP आपको किसी प्राकृतिक आपदा में फँसने से बचा सकते हैं और इसका नाम भी है 'सचेत'। 'सचेत APP', भारत की National Disaster Management Authority (NDMA) ने तैयार किया है। बाढ़, Cyclone, Land-slide, Tsunami, जंगलों की आग, हिमस्खलन, आँधी, तूफान या फिर बिजली गिरने जैसी आपदाएँ हो, 'सचेत APP' आपको हर प्रकार से informed और protected रखने का प्रयास करता है।"

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ('मन की बात' सम्बोधन में)

'सचेत' एक आपदा पूर्व चेतावनी मंच है, जिसे भारत की राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) द्वारा विकसित किया गया है। यह मोबाइल ऐप देश भर के नागरिकों को वास्तविक समय में, स्थान-विशिष्ट चेतावनियाँ देता है, जिससे प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओ के लिए तैयारी को बेहतर बनाया जा सके।

यह अभिनव ऐप Android और iOS दोनों प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध है। यह यूज़र्स को उनके वर्तमान स्थान या उनके द्वारा चुने गए राज्य या जिले से सम्बंधित समय पर अलर्ट प्रदान करता है। 'सचेत' कॉमन अलर्टिंग प्रोटोकॉल (CAP) पर काम करता है, जो सूचनाओं को तेज़ी और सटीकता से प्रसारित करने में सक्षम है।

आपदा चेतावनियों के अतिरिक्त, भारतीय मौसम विभाग (IMD) से प्राप्त दैनिक मौसम पूर्वानुमान और अपडेट भी ऐप पर उपलब्ध हैं, जो नागरिकों को बदलते मौसम के बारे में सतर्क और तैयार रखते हैं। इससे यह ऐप केवल आपात स्थिति में ही नहीं, बल्कि दैनिक जीवन की योजना बनाने में भी सहायक बनता है।

इस ऐप की एक बड़ी विशेषता इसकी समावेशिता (Inclusivity) है। 'सचेत' 12 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है और इसमें अनुवाद व टेक्स्ट-टू-स्पीच (पढ़कर सुनाने) की सुविधा भी है, जिससे महत्वपूर्ण जानकारी सभी के लिए सुलभ हो सके।

उपयोगकर्ता की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इसमें आपदा के दौरान क्या करें और क्या न करें, आपातकालीन हेल्पलाइन नम्बर और सैटेलाइट रिसीवर कनेक्टिविटी जैसी जरूरी जानकारियाँ भी दी गई हैं। यह विशेषता नेटवर्क बाधित होने की स्थिति में भी संचार बनाए रखने में मदद करती है।

सचेत ऐप भारत को आपदा-प्रवण नहीं, आपदा-प्रतिरोधी बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। यह स्थान-विशेष की तात्कालिक चेतावनियाँ और व्यावहारिक जानकारी देकर नागरिकों को सुरक्षित, जागरूक और सचेत बनाता है।

दंतेवाड़ा साइंस सेंटर

प्रगति, ज्ञान और नवाचार का प्रतीक

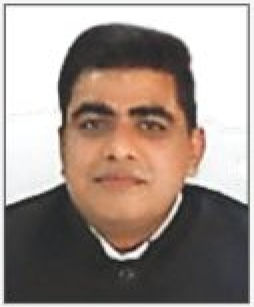

कुणाल दुदावत
कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी,
दंतेवाड़ा, छत्तीसगढ़

दंतेवाड़ा के केन्द्र में एक ऐसा क्षेत्र जो वर्षों तक नक्सल प्रभावित क्षेत्र के रूप में पहचाना जाता रहा है, यहाँ एक ऐतिहासिक परिवर्तन हुआ है- दंतेवाड़ा साईंस सेंटर की स्थापना। यह अत्याधुनिक केन्द्र बस्तर क्षेत्र ही नहीं, बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ राज्य का पहला साइंस सेंटर है जो प्रगति, ज्ञान और जुझारूपन का प्रतीक बनकर उभरा है। इस प्रकार के साइंस सेंटर को नक्सल प्रभावित क्षेत्र में स्थापित करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य था, लेकिन इसकी सफलता यह दर्शाती है कि क्षेत्र में नक्सलवाद का प्रभाव अब काफी हद तक कम हो चुका है। अब डर से शिक्षा की ओर, हिंसा से नवाचार की ओर और अनिश्चितता से अवसर की ओर बढ़ते हुए दंतेवाड़ा ने एक नई दिशा पकड़ी है।

इस दूरदर्शी पहल को सम्भव बनाया जिला प्रशासन ने, जिसमें तत्कालीन कलेक्टर आईएएस मयंक चतुर्वेदी और सीईओ जिला पंचायत जयंती नाहटा की भूमिका निर्णायक रही। दंतेवाड़ा साइंस सेंटर केवल एक शैक्षणिक सुविधा नहीं है, यह परिवर्तन का प्रतीक है। दशकों से दंतेवाड़ा के लोगों, विशेष रूप से युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक अधोसंरचना से वंचित रहना पड़ा था। अब छात्र, शिक्षक और विज्ञान प्रेमी विश्वस्तरीय विज्ञान केन्द्र का लाभ उठा सकते हैं, जो जिज्ञासा, खोज और नवाचार को प्रोत्साहित करता है।

यह केवल एक प्रदर्शनी भवन नहीं है, यह दंतेवाड़ा की जनता का सपना है जो साकार हुआ है। यह विज्ञान का मंदिर, नवाचार का खेल मैदान और भविष्य के वैज्ञानिकों के लिए लॉन्चपैड है।

विज्ञान की अद्भुत दुनिया

दंतेवाड़ा साइंस सेंटर कोई साधारण संग्रहालय नहीं है, यह एक जीवंत ज्ञान का क्षेत्र है, जहाँ इंटरैक्टिव ज़ोन, भविष्य की तकनीकें और रोमांचकारी अनुभव भरे हुए हैं। यह केन्द्र शिक्षित करने, प्रेरित करने और सक्रिय भागीदारी के लिए डिज़ाइन किया गया है। यहाँ कई विषयगत ज़ोन हैं, जो विज्ञान और नवाचार के विभिन्न पहलुओं में गहराई से प्रवेश कराते हैं :

साइंस हब

यह वह स्थान है जहाँ विज्ञान के चमत्कार जीवंत हो जाते हैं। भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव-विज्ञान से जुड़े प्रयोग यहाँ स्वयं किए जा सकते हैं। नवीनतम 3D प्रिंटर के माध्यम से आगंतुक डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग और प्रोटोटाइप निर्माण की प्रक्रिया को स्वयं अनुभव कर सकते हैं।

ख़निज गैलरी

दंतेवाड़ा में भारत के सबसे कीमती ख़निज संसाधन पाए जाते हैं। ख़निज गैलरी इस क्षेत्र की भौगोलिक संपदा को दर्शाती है, जहाँ ख़निजों के निर्माण, निष्कर्षण और औद्योगिक उपयोग को प्रस्तुत किया गया है। इंटरैक्टिव रोबोटिक हथियार और मोशन सेंसर के ज़रिए आगंतुक यह जान सकते हैं कि उद्योगों में खनिजों को कैसे सम्भाला और संसाधित किया जाता है।

स्पेस ज़ोन

यह क्षेत्र अंतरिक्ष की खोज का एक अद्भुत अनुभव देता है। रॉकेट,

सैटेलाइट और लॉन्च वाहनों के मॉडल दर्शकों को अंतरिक्ष तकनीक की दुनिया में ले जाते हैं। स्पेस वर्चुअल रियलिटी (VR) अनुभव से आगंतुक अंतरिक्ष में तैरने, उपग्रह प्रक्षेपण को करीब से देखने जैसी अद्भुत गतिविधियाँ कर सकते हैं।

औद्योगिक ज़ोन

यह ज़ोन औद्योगिक प्रगति की रीढ़ है। यहाँ आगंतुक इंजीनियरिंग, निर्माण और ऑटोमेशन के संसार से रूबरू होते हैं। ह्यूमनॉइड रोबोट दिखाते हैं कि AI आधारित मशीनें कैसे कार्य करती हैं। लाइन रोबोट असेम्बली लाइन की कार्यप्रणाली दर्शाते हैं, और वाल ड्रॉइंग रोबोट दीवारों पर चित्र बनाते हुए रचनात्मकता और तकनीक के संगम को दर्शाते हैं।

इमर्सिव एरिना

यह वह जगह है जहाँ तकनीक और कल्पना मिलते हैं। VR और AR की मदद से आगंतुक समय में पीछे जा सकते हैं, समुद्र की गहराइयों में जा सकते हैं, या मंगल पर चल सकते हैं- वह भी कमरे से बाहर निकले बिना। बायोलॉजी VR ज़ोन मानव शरीर, सूक्ष्मजीवों और जैविक प्रक्रियाओं की रोमांचक झलक प्रस्तुत करता है।

हार्वेस्ट हब

यहाँ कृषि और तकनीक का मिलन दिखाई देता है। स्मार्ट खेती, हाइड्रोपोनिक्स, और AI-आधारित निगरानी जैसी तकनीकों को यहाँ प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। आधुनिक सिंचाई प्रणाली, पोषक तत्वों का संतुलन, और भविष्य की खेती को यहाँ अनुभव किया जा सकता है।

ईकोस्फेयर

प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर यह ज़ोन पर्यावरण जागरूकता, जलवायु परिवर्तन और संरक्षण को बढ़ावा देता है। इसमें जैव विविधता, नवीकरणीय ऊर्जा और पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र की नाज़ुकता को इंटरैक्टिव रूप में दिखाया गया है। ड्रोन एरिना में आगंतुक देख सकते हैं कि कैसे ड्रोन का उपयोग वनों की निगरानी, वन्यजीव संरक्षण और खेती में किया जा रहा है।

मिनिएचर रूम - रेलवे और हवाई अड्डों के मॉडल

इस ज़ोन में रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों और ट्रांसपोर्ट हब्स के जीवंत मॉडल हैं, जो आधुनिक यातायात प्रणाली के पीछे की जटिल लॉजिस्टिक्स को दर्शाते हैं।

मेकरस्पेस और लाइब्रेरी

यह एक रचनात्मक केन्द्र है, जहाँ युवा मन अपने विचारों को आकार दे सकते हैं। इसमें नवीनतम किताबें, उपकरण और शिक्षण संसाधन उपलब्ध हैं। रोबोटिक्स एरिना में छात्र अपने खुद के रोबोट, AI-डिवाइस और ऑटोमेटेड सिस्टम बना और परीक्षण कर सकते हैं।

वैज्ञानिक विरासत की झलक

साइंस सेंटर के केन्द्र में एक 'गैलरी ऑफ साइंटिफिक अचीवमेंट्स' है, जो भारत और विश्व के महान वैज्ञानिकों को समर्पित है। यह प्रदर्शनी सी.वी. रमन, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, अल्बर्ट आइंस्टीन, मैरी क्यूरी जैसे वैज्ञानिकों के बारे में जानकारी देने के साथ आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती है।

एक नए युग की शुरुआत

दंतेवाड़ा में विज्ञान से जुड़ी शिक्षा की बढ़ती मांग और छात्रों की बढ़ती जिज्ञासा को देखते हुए यह केन्द्र ज्ञान और अवसर के बीच की खाई को पाटने जा रहा है। यह युवाओं की प्रतिभा को पोषित करेगा और नई सम्भावनाओं के द्वार खोलेगा। एक ऐसा क्षेत्र जिसने अनेकों चुनौतियाँ झेली हैं, वहाँ दंतेवाड़ा साइंस सेंटर एक टर्निंग पॉइंट बनकर उभरा है- एक ऐसा प्रतीक जो विकास और असीम सम्भावनाओं को दर्शाता है और यह सुनिश्चित करता है कि विज्ञान और शिक्षा ही दंतेवाड़ा के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला बने।

दंतेवाड़ा साइंस सेंटर

यह विशेष फोटो फीचर दंतेवाड़ा साइंस सेंटर के विविध जोन की एक झलक प्रस्तुत करता है। इसका उद्देश्य जिज्ञासा को जगाना, नवाचार को प्रेरित करना और युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना है। अंतरिक्ष अन्वेषण और रोबोटिक्स से लेकर सतत कृषि और वर्चुअल रियलिटी तक – सेंटर का हर कोना प्रगति, दृढ़ता और आकांक्षा की कहानी कहता है।

कृषि जोन

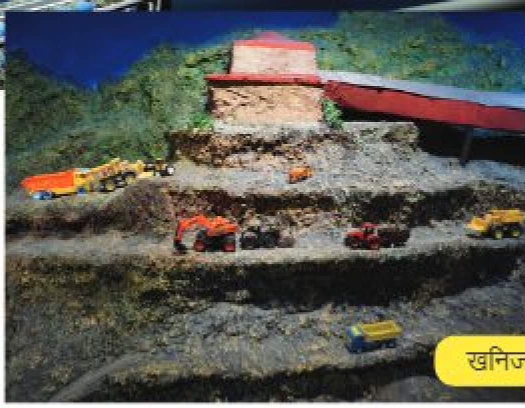
खनिज दीर्घा

अतरिक्ष जोन

औद्योगिक जोन

इमर्सिव जोन

मेकर्सस्पेस

मिनिएचर रूम – रेलवे और हवाई अड्डों के जीवंत लघु मॉडल

एक पेड़ माँ के नाम अभियान

हरित भारत की ओर एक कदम

“मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे देश की सबसे बड़ी ताकत हमारे 140 करोड़ नागरिक हैं, उनका सामर्थ्य है, उनकी इच्छा शक्ति है, और जब करोड़ों लोग, एक-साथ किसी अभियान से जुड़ जाते हैं, तो उसका प्रभाव बहुत बड़ा होता है। इसका एक उदाहरण है 'एक पेड़ माँ के नाम'। ये अभियान उस माँ के नाम है, जिसने हमें जन्म दिया और ये उस धरती माँ के लिए भी है, जो हमें अपनी गोद में धारण किए रहती है।”

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

महात्मा गाँधी ने एक बार कहा था, “हम विश्व के वनों के साथ जो कर रहे हैं, वह वास्तव में हमारे स्वयं के और एक-दूसरे के साथ व्यवहार का प्रतिबिम्ब है।” इस विचार को सकारात्मक रूप से अपनाते हुए, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 5 जून, 2024 को 'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान की शुरुआत की। यह अभिनव पहल पर्यावरण संरक्षण को एक सामाजिक उद्देश्य से जोड़ती है। आइए, इस अभियान के दोहरे उद्देश्य को विस्तार से समझते हैं :

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में वृक्षारोपण

भारत सहित दुनिया के अनेक हिस्सों में वनों की कटाई, प्रदूषण और पर्यावरणीय गिरावट चिंता का विषय बने हुए हैं। इन चुनौतियों के बीच, पेड़ लगाना जलवायु परिवर्तन से निपटने और पारिस्थितिक संतुलन बहाल करने

के सबसे सरल और प्रभावी उपायों में से एक है। हरियाली जलचक्र को संतुलित करती है और तापमान को काफी हद तक नियंत्रित करती है। पेड़-पौधे बढ़ते हैं, तो वन्यजीवों को भी जीवन मिलता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' में कहा, “पेड़ों से शीतलता मिलती है, पेड़ों की छाँव में गर्मी से राहत मिलती है... इसके साथ ही यहाँ Water bodies की संख्या भी बढ़ गई है।”

डीडी न्यूज़ के अनुसार कई राज्यों ने करोड़ों और लाखों की संख्या में वृक्षारोपण करके सितम्बर 2024 तक के लक्ष्यों को पार कर लिया है :

अरुणाचल प्रदेश - 1.74 करोड़; असम - 3.17 करोड़; छत्तीसगढ़ - 2.04

करोड़; गुजरात - 15.5 करोड़; गोवा - 5.4 लाख; हरियाणा - 12.20 करोड़; राजस्थान - 5.5 करोड़; मध्य प्रदेश - 4.41 करोड़; पंजाब - 94 लाख; नगालैंड - 34.6 लाख; ओडिशा - 4.3 करोड़; तेलंगाना - 8.34 करोड़; उत्तर प्रदेश - 26.5 करोड़।

इसके अतिरिक्त, बिहार - 1.46 करोड़; केरल - 11.8 लाख; महाराष्ट्र - 1.78 करोड़; सिक्किम - 12 लाख; और उत्तराखंड - 82 लाख, जैसे राज्यों ने भी इस अभियान को सफ़ल बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

अभियान का भावनात्मक पक्ष

'एक पेड़ माँ के नाम' केवल वृक्ष लगाने या जागरूकता फैलाने का अभियान नहीं है। यह उन माताओं को श्रद्धांजलि देने का एक माध्यम है, जिन्होंने अपने बच्चों और परिवारों के लिए अनगिनत बलिदान दिए हैं। माँ - एक ऐसा स्वरूप, जो निस्वार्थ प्रेम और देखभाल का प्रतीक है। एक पेड़ जीवन, विकास और सुरक्षा का प्रतीक होता है - ठीक वैसे ही जैसे एक माँ। माँ के नाम पर एक वृक्ष लगाना, उनके स्नेह और ज्ञान को अमर करने का एक सुंदर प्रयास है।

इसके साथ ही इस अभियान के माध्यम से परिवारों के बीच भावनात्मक जुड़ाव भी मजबूत होता है, और हमें यह एहसास कराता है कि हमें अपने परिवार और प्रकृति, दोनों के प्रति जिम्मेदारी निभानी है। प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी सुझाव दिया, "अहमदाबाद में लगाए गए पेड़ वहाँ खुशियों की नई छाया लेकर आ रहे हैं। मैं फिर कहता हूँ - धरती की सेहत के लिए, जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए और अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए पेड़ लगाइए।"

'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान मातृस्नेह और पर्यावरणीय स्थिरता का एक सुंदर संगम है। यह एक ऐसा आंदोलन है, जो हर नागरिक को पृथ्वी और अपने परिवार के प्रति सामाजिक जिम्मेदारी निभाने के लिए प्रेरित करता है। जैसे-जैसे ये पेड़ बढ़ेंगे, ये माताओं को समर्पित एक सजीव श्रद्धांजलि बनेंगे और भारत के पर्यावरण संरक्षण के संकल्प का जीवंत प्रमाण रहेंगे।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि की नई उपलब्धियाँ

“...वायनाड में ये केसर किसी खेत या मिट्टी में नहीं बल्कि Aeroponics Technique से उगाए जा रहे हैं। कुछ ऐसा ही हैरत भरा काम लीची की पैदावार के साथ हुआ है। हम तो सुनते आ रहे थे कि लीची बिहार, पश्चिम बंगाल या झारखंड में उगती है। लेकिन अब लीची का उत्पादन दक्षिण भारत और राजस्थान में भी हो रहा है।... अगर हम कुछ नया करने का इरादा कर लें, और मुश्किलों के बावजूद डटे रहें, तो असम्भव को भी सम्भव किया जा सकता है।”

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

भारत एक कृषि प्रधान देश है, लेकिन अब यह देश सिर्फ परम्परागत खेती तक सीमित नहीं रहा। वैज्ञानिक सोच, नवाचार और दृढ़ संकल्प ने खेती के क्षेत्र में कई ऐसे चमत्कार कर दिखाए हैं, जो कभी असंभव माने जाते थे। आज देश के अलग-अलग हिस्सों से ऐसी कहानियाँ सामने आ रही हैं, जो न केवल प्रेरक हैं, बल्कि पूरे कृषि तंत्र के लिए उम्मीद की किरण भी हैं।

मैदानी इलाकों में सेब की मिठास

आमतौर पर सेब की खेती पहाड़ी इलाकों में ही मुमकिन मानी जाती थी, लेकिन कर्नाटक के बागलकोट ज़िले के श्री शैल तेली ने इस धारणा को तोड़ दिया। उन्होंने अपने गाँव कुलाली में 35 डिग्री से अधिक तापमान में सेब उगाने में सफलता पाई है। यह कार्य केवल एक प्रयोग भर नहीं था, बल्कि वर्षों की मेहनत और लगन का परिणाम था। आज उनके बगीचे में सेब के पेड़ फल दे रहे हैं और स्थानीय बाजार में उनकी मांग भी बढ़ी है। यह उपलब्धि साबित करती है कि जब किसान कुछ नया करने की ठान ले, तो कोई भी बाधा बड़ी नहीं होती।

किन्नौर की घाटियों में केसर की खुशबू

हिमाचल प्रदेश का किन्नौर ज़िला अपने स्वादिष्ट किन्नौरी सेब के लिए प्रसिद्ध है। अब इसी ज़िले की सुंदर सांगला घाटी में केसर की खेती शुरू हुई है। पहले यह कल्पना करना भी कठिन था कि केसर, जो कि मूलतः जम्मू और कश्मीर में उगाई जाती है, अब हिमाचल की वादियों में भी फल-फूल सकती है। यह नवाचार हिमाचल के किसानों को नई सम्भावनाओं और बेहतर आमदनी की दिशा में ले जा रहा है।

केरल का हवाई खेत एरोपोनिक तकनीक से केसर

केसर की खेती का एक और अद्भुत उदाहरण केरल के वायनाड ज़िले से सामने आया है। यहाँ खेत नहीं, बल्कि हवा में केसर उगाई जा रही है - एरोपोनिक तकनीक के ज़रिए।

यह तकनीक मिट्टी रहित खेती की एक आधुनिक पद्धति है। इस नवाचार ने यह सिद्ध कर दिया है कि वैज्ञानिक सोच और तकनीकी सहायता से कोई भी फसल किसी भी क्षेत्र में सम्भव हो सकती है।

दक्षिण भारत और राजस्थान में लीची की बहार

लीची आमतौर पर बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों की फसल मानी जाती है। लेकिन अब यह धारणा भी टूट रही है। तमिलनाडु के कोडईकनाल में थिरु वीरा अरासु ने लीची के पेड़ लगाए और सात वर्षों की मेहनत के बाद अब वे फल देने लगे हैं। यह सफलता केवल उनके लिए नहीं, बल्कि आस-पास के कई किसानों के लिए प्रेरणा बन गई है। इसी तरह, राजस्थान के जितेन्द्र सिंह राणावत ने भी लीची की खेती में सफलता पाई है। यह सूखे और गर्म प्रदेश के लिए किसी उपलब्धि से कम नहीं।

ये कहानियाँ सिर्फ खेती की नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, नवाचार और संकल्प की भी हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में इन किसानों का विशेष रूप से उल्लेख किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि देश की उन्नति का रास्ता खेतों से होकर ही गुज़रता है। आज के किसान केवल अनाज उत्पादक नहीं, बल्कि नवाचार के योद्धा बन चुके हैं।

भारत की कृषि अब केवल मौसम, भौगोलिक सीमाओं या परम्परागत तरीकों तक सीमित नहीं रही, आज यह एक नई उड़ान भर रही है। अब यहाँ हर खेत एक प्रयोगशाला बन चुका है और हर किसान एक नवप्रवर्तक। अब खेती मात्र अन्न उपजाने का माध्यम नहीं बल्कि नवाचार, आत्मनिर्भरता और सामाजिक बदलाव की मिसाल बन गई है। देश के विभिन्न कोनों से ऐसी कहानियाँ सामने आ रही हैं, जहाँ कठिन परिस्थितियों के बावजूद किसानों ने अपने संकल्प, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और उद्यमशीलता से असम्भव को सम्भव कर दिखाया है। भारत की मिट्टी से अब सिर्फ फसलें नहीं, बल्कि उम्मीद, आत्मविश्वास और प्रेरणा की कहानियाँ भी जन्म ले रही हैं जो पूरे देश को आगे बढ़ने की राह दिखा रही हैं।

भारतीय कृषि की बदलती तस्वीर की कहानी

किसानों की जुबानी

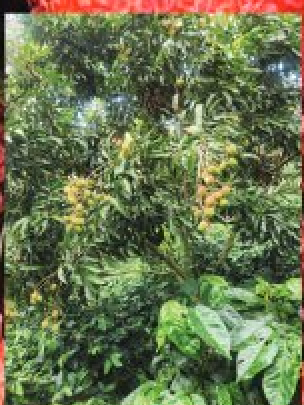

भारत के अलग-अलग कोनो मे किसान आज सिर्फ फसल नहीं उगा रहे हैं, बल्कि नई सोच और प्रयोग से कृषि के क्षेत्र में क्राति ला रहे हैं। चाहे वह कर्नाटक के मैदानी इलाको मे सेब की मिठास हो या तमिलनाडु और राजस्थान मे लीची की सफलता, हर कहानी एक नए भारत की तस्वीर पेश करती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में इन मेहनती किसानों का जिक्र कर उनके योगदान को राष्ट्रीय पहचान दी है। प्रस्तुत है उन्ही किसानो की कहानी उन्ही की जुबानी।

किसान अगर ठान ले तो उसके लिए कोई भी कार्य असम्भव नही है। हमारे मेवाड़ क्षेत्र मे तापमान अधिक रहता है। इसलिए मैने लीची के सम्बध मे इन्टरनेट के माध्यम से अध्ययन किया और कुछ सीनियर साथियो से मदद ली। इसका परिणाम यह हुआ कि हम लीची के लिए आवश्यक तापमान को बरक़रार रखने मे सफल हो गए। प्रधानमंत्रीजी ने हम जैसे छोटे किसानो का जिक्र किया और देश भर को बताया कि कैसे किसान छोटे-छोटे प्रयोग करके खेती की दुनिया में कुछ नया करने की कोशिश कर रहे हैं। मैं प्रधानमंत्रीजी का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ।

जितेन्द्र सिंह राणावत, कृषक, राजस्थान

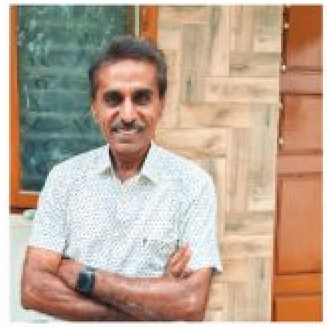

मेरा मानना है कि यदि इसे उन किसानों के लिए भी शुरू किया जाए जो अंतरफसल के रूप में कॉफी उगाते हैं, तो एक दिन इस क्षेत्र में 16,000 हेक्टेयर लीची की खेती की जा सकती है, जो भारत की मांग के एक हिस्से को पूरा करने के लिए पर्याप्त है। यह आय देश और हमारे लोगों के लिए बहुत बड़ी सेवा होगी। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में लीची की खेती के संदर्भ में मेरा नाम लिया, इस पर मुझे अत्यंत गर्व और प्रसन्नता की अनुभूति हुई।

थिरु वीरा अरासु, कृषक, तमिलनाडु

मेरे फैसले पर शुरुआत में बहुत लोगो ने शक जताया और मज़ाक भी उड़ाया। लोगों ने मुझे समझाया कि सेब ठंडे मौसम मे ही उगते हैं, जबकि बागलकोट का तापमान अक्सर 40 डिग्री से ज्यादा होता है। आज बहुत से किसान यहाँ आते हैं और सेब की इस कामयाब खेती को अपनी आँखों से देखकर हैरान होते हैं। मैं उन्हे अपने सेब भी देता हूँ ताकि वे खुद इसका स्वाद और रंग देखकर समझ सकें कि मेहनत से क्या हासिल किया जा सकता है। सच्ची मेहनत और कामयाबी पर अपने यक़ीन के साथ कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। मैं दिल से प्रधानमंत्री मोदीजी का शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होंने मेरी कोशिशों को पहचाना और सराहा।

श्री शैल तेली, कृषक, बागलकोट, कर्नाटक

जागृति का प्रतीक अप्रैल

चम्पारण, जलियाँवाला बाग और दांडी मार्च

"मेरे प्यारे देशवासियो, आज अप्रैल का आखिरी रविवार है। कुछ ही दिनों में मई का महीना शुरू हो रहा है। मैं आपको आज से करीब 108 साल पहले लेकर चलता हूँ। साल 1917, अप्रैल और मई के यही दो महीने - देश में आज़ादी की एक अनोखी लड़ाई लड़ी जा रही थी।"

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

अप्रैल का महीना भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक विशेष स्थान रखता है। यह न केवल ऐतिहासिक घटनाओं का प्रतीक है, बल्कि एक ऐसे युग की शुरुआत का गवाह है जिसने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा ही बदल दी। चाहे वह चम्पारण सत्याग्रह (1917) हो, जिसमें गाँधीजी ने पहली बार अहिंसात्मक प्रतिकार का सफल प्रयोग किया, या जलियाँवाला बाग नरसंहार (1919), जिसने औपनिवेशिक शासन की क्रूरता को उजागर कर दिया, या फिर दांडी मार्च (1930), जिसने ब्रिटिश कानून की नींव को हिला दिया, ये तीनों घटनाएँ एक कालखंड में नहीं, परंतु एक ही उद्देश्य के लिए लड़ी गई थीं- स्वराज्य।

इन घटनाओं ने यह सिद्ध किया कि भारत की आज़ादी कोई दया नहीं थी, बल्कि यह बलिदान, साहस और न्याय के प्रति अडिग विश्वास का परिणाम थी।

चम्पारण सत्याग्रह (1917) : स्वतंत्रता की पहली चिंगारी

अप्रैल 1917 की तपती गर्मी में, बिहार के चम्पारण में शांति से शुरू हुआ आंदोलन एक क्रांति में बदल गया।

अंग्रेजों ने किसानों पर तीन कठिया प्रणाली के तहत जबरन नील की खेती थोप रखी थी, जिससे वे कर्ज में डूबते जा रहे थे और उनकी जमीन बंजर हो रही थी।

जब महात्मा गाँधी चम्पारण पहुँचे, तो उन्होंने वहाँ केवल शोषण नहीं, बल्कि सत्याग्रह की शक्ति को परखने का अवसर देखा। किसानों ने काँपती आवाज़ में कहा, "हमारी ज़मीन मर रही है, खाने को कुछ नहीं!" गाँधीजी ने किसानों की व्यथा को देश की आवाज़ बनाया।

गाँधीजी ने शांतिपूर्ण प्रतिकार, साक्ष्य-संग्रह और गिरफ्तारी को हथियार बनाया। सरकार को किसानों की एकता के सामने झुकना पड़ा और अंततः नील की जबरन खेती समाप्त करनी पड़ी। यह केवल एक जीत नहीं थी- यह संदेश था कि नैतिक साहस से साम्राज्य हिल सकते हैं।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का दस्तावेज़ : 'चम्पारण में सत्याग्रह'

इस आंदोलन के एक प्रमुख स्तंभ थे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जो आगे चलकर भारत के पहले राष्ट्रपति बने। उनकी पुस्तक 'चम्पारण में सत्याग्रह' केवल इतिहास नहीं, बल्कि विरोध की उद्घोषणा है। उन्होंने किसानों की पीड़ा, गाँधीजी की रणनीति और एकजुट संघर्ष को सजीव रूप में चित्रित किया।

आज के युवाओं के लिए यह पुस्तक एक दिशा-सूचक यंत्र है, जो यह बताती है- बदलाव तब आता है जब आम लोग खड़े होते हैं। डॉ. प्रसाद के शब्दों में :

"स्वतंत्रता दी नहीं जाती, उसे वे लोग हासिल करते हैं जो उसे पाने का साहस रखते हैं।"

जलियाँवाला बाग नरसंहार (1919) : अप्रैल में खून से रंगी धरती

चम्पारण के दो साल बाद, 13 अप्रैल 1919, भारत के इतिहास में सबसे काले

दिनों में से एक बन गया। अमृतसर के जलियाँवाला बाग में हजारों लोग रौलेट एक्ट के विरोध में एकत्र हुए थे। बिना किसी चेतावनी के जनरल डायर ने सैनिकों को निहत्थे लोगों पर गोलियाँ चलाने का आदेश दे दिया। हजार से अधिक लोग मारे गए।

यह केवल हिंसा नहीं थी, यह भारत की आत्मा को कुचलने की ब्रिटिश सरकार की कोशिश थी, लेकिन हुआ इसके ठीक उलट। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी 'नाइटहुड' सम्मान लौटा दिया, गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन की घोषणा कर दी, और देशभर में यह समझ पुख्ता हो गई कि अब स्वतंत्रता याचना से नहीं, संघर्ष से ही मिलेगी।

जलियाँवाला बाग अब क्रूरता का प्रतीक नहीं, बल्कि भारत के अपराजेय संकल्प का प्रतीक बन गया।

दांडी मार्च (1930) : नमक से हुई प्रतिरोध की शुरुआत

11 साल बाद, 12 मार्च 1930 को, गाँधीजी ने अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से 24 दिन की यात्रा शुरू की और 6 अप्रैल को दांडी तट पर पहुँचे। उन्होंने समुद्र से नमक उठाकर ब्रिटिश कानून को तोड़ा। यह कार्य प्रतीकात्मक था, लेकिन

इसका संदेश गूँज उठा :

'कोई भी कानून उस जनता की गरिमा को नहीं बाँध सकता जो जाग चुकी है।'

इस नमक सत्याग्रह ने राष्ट्रव्यापी सिविल नाफरमानी आंदोलन को जन्म दिया। लाखों लोगों ने नमक बनाया, ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार किया, और जेलों को भर दिया। यह केवल नमक का मामला नहीं था- यह आत्म-सम्मान और आत्मनिर्भरता का उद्घोष था।

ज्योति अभी बुझी नहीं है

अप्रैल महीने में इन ऐतिहासिक घटनाओं का संयोग कोई संयोग मात्र नहीं- यह एक संगठित स्वतंत्रता संघर्ष की कड़ी है। चम्पारण ने हमें सिखाया कि सामूहिकता में शक्ति है, जलियाँवाला बाग ने बताया कि क्रूरता के विरुद्ध एकता जन्म लेती है, और दांडी मार्च ने सिद्ध किया कि प्रतीकों के माध्यम से साम्राज्य को चुनौती दी जा सकती है।

ये घटनाएँ मात्र इतिहास की धरोहर नहीं हैं, ये आज के युग के लिए भी जीवंत संदेश हैं। अन्याय आज भी जब भ्रष्टाचार, विषमता और उदासीनता के रूप में सामने आता है, तब चम्पारण के किसान, जलियाँवाला के बलिदानी और दांडी के सत्याग्रही हमें रास्ता दिखाते हैं।

हमें केवल अतीत को श्रद्धांजलि नहीं देनी है- हमें उस चिंगारी को फिर से जलाना है।

स्वतंत्रता कोई उपहार नहीं थी- यह एक उत्तरदायित्व है, जिसे बलिदान और संघर्ष से प्राप्त किया गया।

तो आइए, उनके पदचिह्नों पर चलें-
सत्य के साथ, न्याय की ओर और अटूट संकल्प के साथ।

बाबू वीर कुँवर सिंह
साहस की विरासत

26 अप्रैल को हमने 1857 की क्रांति के महान नायक बाबू वीर कुँवर सिंहजी की पुण्यतिथि भी मनाई है। बिहार के महान स्वतंत्रता सेनानी से पूरे देश को प्रेरणा मिलती है। हमें ऐसे ही लाखों स्वतंत्रता सेनानियों की अमर प्रेरणाओं को जीवित रखना है।

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ('मन की बात' सम्बोधन में)

जब भारत 10 मई को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की वर्षगांठ मना रहा है, तब हम उन असंख्य वीरों को याद करते हैं जिन्होंने अद्वितीय साहस के साथ स्वतंत्रता की ज्योति प्रज्वलित की। इन वीरों में बाबू वीर कुँवर सिंह का नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है जो 1857 की क्रांति के सबसे प्रेरणादायक नेताओं में से एक थे।

बिहार में जन्मे वीर कुँवर सिंह उस समय अस्सी वर्ष के पार थे जब उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ़ हथियार उठाए, यह उनके अदम्य साहस और मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम का प्रतीक है।

26 अप्रैल को भारत ने इस महान योद्धा को उनकी पुण्यतिथि पर नमन किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में वीर कुँवर सिंह के शौर्य और उनके प्रेरणादायक जीवन की स्मृति को साझा किया। 1857 की क्रांति के दौरान उनके द्वारा अपनाई गई गुरिल्ला युद्धनीति और घायल होने के बावजूद गंगा पार करने का साहस भारत की आजादी की लड़ाई में एक किंवदंती बन चुका है।

उनका जीवन दृढ़ संकल्प, नेतृत्व और बलिदान का अद्वितीय उदाहरण है। अपने अंतिम क्षणों तक वे स्वतंत्रता के संकल्प से डटे रहे, व्यक्तिगत यश के लिए नहीं बल्कि एक स्वतंत्र भारत के स्वप्न के लिए उन्होंने संघर्ष किया।

आज जब हम 'अमृत काल' में आगे बढ़ रहे हैं, तब वीर कुँवर सिंह की विरासत हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान को ऊर्जा प्रदान करती है। उनकी कहानी हमें यह सिखाती है कि देशभक्ति के लिए उम्र कभी बाधा नहीं बन सकती और कर्तव्य की पुकार हर कठिनाई से ऊपर होती है।

आइए हम उनके साहस, एकता और राष्ट्र के प्रति समर्पण की ज्वाला को जीवित रखकर उनकी स्मृति को सच्ची श्रद्धांजलि दें।

वीर कुँवर सिंह की विरासत केवल इतिहास का एक अध्याय नहीं, बल्कि हमारे लिए प्रेरणा और शक्ति का स्रोत है।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Anurag Thakur

#MannKiBaat में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

Dharmendra Pradhan

@dpradhanbjp

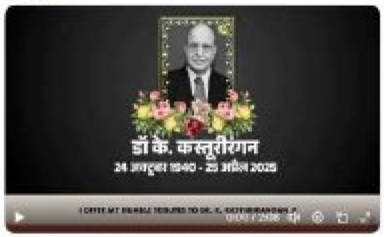

Himanta Biswa Sarma

#EkPedMaaKeNaam initiative shows the power of collective action - Hon PM Shri @narendramodi Ji

#MannKiBaat @PMOIndia

Himanta Biswa Sarma

Growing curiosity for science and innovation amongst youth will take India to new heights - Hon PM Shri @narendramodi Ji

#MannKiBaat @PMOIndia

Keshav Prasad Maurya

@kpmaurya1

#MannKiBaat

Keshav Prasad Maurya

@kpmaurya1

#MannKiBaat

Kiren Rijiju

@KirenRijiju

#MannKiBaat

Kiren Rijiju

@KirenRijiju

#MannKiBaat

Piyush Goyal

@PiyushGoyal

'SACHET App' भारत की National Disaster Management Authority ने तैयार किया है।

#MannKiBaat

Dr. Ramesh Pokhriyal Nishank

@DrRPNishank

#MannKiBaat

Shivraj Singh Chouhan

@ChouhanShivraj

#MannKiBaat

Shivraj Singh Chouhan

@ChouhanShivraj

#MannKiBaat

भारत सबसे किफायती अंतरिक्ष कार्यक्रम का कर रहा नेतृत्व : मोदी

मन की बात : पीएम ने कहा-युवा अंतरिक्ष स्टार्टअप क्षेत्र में हर दिन हासिल कर रहे नई उपलब्धियां

एक पेड़ माँ के नाम अभियान में एक साल में 140 करोड़ पेड़ लगे

140 करोड़ भारतीयों की एकजुटता हमारी सबसे बड़ी ताकत : प्रधानमंत्री

अहमदाबाद शहर में पिछले तीन वर्षों में 70 लाख से अधिक वृक्षारोपण

ہندوستان خلائی شعبے میں نئی بلندیاں سر کرے گا: مودی

Mann ki Baat

India extends healing hands to world: PM Narendra Modi highlights NRIs' work in Africa, India's disaster response

Sachet, a new mobile application, can save you from getting trapped in any natural disaster: PM Modi

India leading most cost-effective, successful space programme in world: PM

भारत दुनिया में सबसे किफायती, सफल अंतरिक्ष कार्यक्रम का नेतृत्व कर रहा है : प्रधानमंत्री मोदी

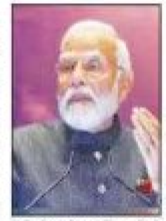

प्रधानमंत्री मोदी बृहस्पतिवार को मुंबई में पहले वेव्स शिखर सम्मेलन का करेंगे उद्घाटन

ಮನದ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಕಸ್ತೂರಿ ರಂಗನ್ ಸ್ಮರಣೆ

ಬಾಹ್ಯಾಕಾಶದಲ್ಲಿ ಭಾರತ ಸಾಧನೆಗೆ ಮೆಚ್ಚು

India emerges as global space leader: PM Modi

Apple farming in K'taka, saffron in Kerala: PM Modi showcases India's green success stories

Terror cannot derail progress in Kashmir: Modi

Terror cannot derail progress in Kashmir: Modi

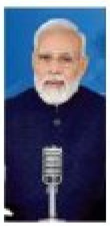

Says 'every Indian feels the pain, every drop of blood boils'

Unity is biggest strength in fighting terrorism, says Modi in *Mann ki Baat*

DEEP ANGUISH. Calls Pahalgam attack desperate attempt by terrorists to undo gains seen in J&K in recent years

Abhishek Law
New Delhi

BROADER MESSAGE. Prime Minister Narendra Modi reaffirmed India's commitment to fighting terrorism, both within and beyond its borders

National unity remains the cornerstone of the country's counter-terrorism strategy, said Prime Minister Narendra Modi in his monthly radio address to the citizens, *Mann Ki Baat*. Global condemnation of the terrorist attack at Pahalgam, in Jammu & Kashmir, he said, highlighted the increasing international recognition of terrorism as a shared threat.

"The solidarity of 140 crore Indians is our biggest strength," Modi said, referring to the terrorist attack of April 22 in which over 25 innocent tourists were murdered. The attack, he said, was a "cowardly conspiracy" aimed at halting the region's return to normalcy and development. Modi assured that those responsible would be dealt with firmly, promising the "harshest response" and swift justice.

The Prime Minister expressed deep anguish. "The blood of every Indian is boiling... the enemies of Kashmir do not want vibrant schools, democratic progress, or flourishing tourism," he said.

Modi called the attack a desperate attempt by terrorists and their handlers to undo the gains seen in J&K in recent years — ranging from rising tourist footfalls to improved infrastructure and growing employment opportunities.

FIGHTING TERRORISM

"The perpetrators and conspirators of this attack will be served with the harshest response," he said. While extending condolences to the families of the victims, the Prime Minister reiterated that such acts would not be allowed to break the nation's resolve.

In a broader message, the Prime Minister reaffirmed India's commitment to fighting terrorism, both within and beyond its borders. "Today the world is watching, and the entire country speaks in one voice," he said, closing with a reminder of the strength found in collective will.

"We have to strengthen our resolve to face this challenge that has surfaced before the country. We have to demonstrate strong will-power as a nation. Friends, the anger that we the people of India feel, that anger is there in the whole world," the Prime Minister said.

देश के प्रति दुनिया का नजरिया बदल रहे युवा, विश्व में हो रही भारतीय टैलेंट की तारीफ : पीएम मोदी

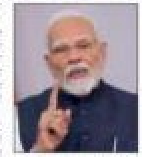

● मोदी ने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान से जुड़ने का आह्वान किया

ಮುಧೋಳದಲ್ಲಿ ಸೇಬು ಬೆಳೆದ ರೈತ

121st episode of Mann ki Baat

India leading most successful space programme in world: PM

കുങ്കുമപ്പൂവിൽ കാർഷികവിപ്ലവം: മലയാളിക്ക് മോദിയുടെ പ്രശംസ

ہندوستان دنیا میں انتہائی موثر اور کامیاب خلائی پروگرام کی قیادت کر رہا ہے۔ وزیر اعظم

خلائی سفر میں ہندوستان آگے بڑھ رہا ہے

ANI NEWS

Over 70 lakh trees planted in Ahmedabad in three years, PM Modi commends city's efforts in 'Mann Ki Baat'

INDIA TV

PM Modi highlights Sachet App in Mann Ki Baat: Know its features and why you must download it

KRISHI JAGRAN

Mann Ki Baat: PM Modi Highlights Farmers Breakthroughs, from Apple Cultivation in Karnataka to Saffron Farming in Kerala

mint

PM Modi urges use of Sachet app, call it 'important safety tool' – All you need to know

नवभारत

Mann Ki Baat: मन की बात में पीएम मोदी ने किया छत्तीसगढ़ का जिक्र, डेप्युटी सीएम ने कहा- बस्तर में हो रहा बदलाव

oneindia

देश में खेती का बदलता चेहरा! 'मन की बात' में पीएम मोदी ने किसानों के परिश्रम को सराहा

Mudhol: PM Narendra Modi mentions farmer Srishail Teli's apple farming in Mann Ki Baat

ZEE BUSINESS

Mann Ki Baat: 'असंभव को संभव' करने वाले किसानों को PM Modi ने किया सलाम, सुनाई हैरान करने वाली कई दास्तान

ZEE NEWS हिंदी

Mann Ki Baat: मन की बात में PM मोदी ने किया छत्तीसगढ़ का जिक्र, दंतेवाड़ा के साइंस सेंटर की तारीफ

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार